काव्य

यह संकलन

साहित्य समाज का दर्पण है। युग और युगधर्म साहित्य में बिम्ब और प्रतिबिम्ब भाव से प्रतिभाषित होता है। कवि और युग एक-दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। इसीलिए कहा जाता है कि कवि शून्य में रचना नहीं करता है, वह युग की परिस्थितियों से प्रभावित होता है और अपनी कथनी से युग को प्रभावित भी करता है। कवि जाने अथवा अनजाने में अपने वातावरण से प्रभावित भी होता है और यदि कवि सशक्त होता है तो वह स्वयं समाज को भी प्रभावित करता है। कवि भी समाज का ही एक अंग है, अतः वह जो कुछ लिखता है, उस पर समाज का प्रभाव स्वाभाविक है। कवि एक ओर युग को देता है, तो दूसरी ओर लेता भी है; क्योंकि कवि इसी संसार का प्राणी है। अतः किसी कवि का मूल्यांकन करने से पूर्व उस युग का अध्ययन करना आवश्यक है। इसीलिए प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक में कवियों की रचनाओं के संकलन के साथ ही उनके युगों से सम्बन्धित सामग्री भी भूमिका के अन्तर्गत दी गयी है।

इस संकलन में कालक्रम से, प्रमुख कवियों की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ संकलित करते हुए मध्य युग के कुछ अन्य प्रतिनिधि कवियों–सेनापति, देव और घनानन्द की रचनाओं का समावेश 'विविधा' के अन्तर्गत किया गया है। सेनापति मध्य युग के एकमात्र ऐसे कवि हैं, जिन्होंने प्रकृति को अपनी काव्य-रचना का स्वतन्त्र विषय बनाया है और विभिन्न ऋतुओं के बड़े ही सरस वर्णन उपस्थित किये हैं। देव उन कवियों की श्रेणी में आते हैं जिनमें उच्चकोटि के आचार्यत्व के साथ उसी स्तर की काव्य-प्रतिभा भी विद्यमान है। घनानन्द उत्तर-मध्य युग के विशिष्ट कवि हैं, जिन्होंने किसी आश्रयदाता की रुचि का अनुसरण करते हुए काव्य-रचना नहीं की, वरन् मन की सहज प्रेरणा से कविताएँ लिखी हैं।

हिन्दी कवियों की रचनाओं का चयन करते हुए इस बात का बराबर ध्यान रहा है कि संकलित रचनाएँ छात्रों की मानसिक अवस्था, बौद्धिक क्षमता और ग्रहण-शक्ति के अनुरूप हों। कक्षा-11 के छात्र-छात्राएँ प्रायः पन्द्रह से सत्रह वर्ष की अवस्था के होते हैं। अतः उनकी अवस्था के अनुरूप सहज बोधगम्य रचनाएँ ही एकत्र की गयी हैं। किशोर-मन वयःसन्धि की स्थिति में जो कुछ सोचता-विचारता है, जैसी इच्छाओं, आकांक्षाओं को अपने मन में सँजोता है, जैसे स्वप्न देखता और कल्पनाएँ करता है, उन्हीं के अनुरूप रचनाओं का संकलन यहाँ किया गया है। इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि संकलित रचनाओं द्वारा युवा पीढ़ी के मन का संस्कार हो, उसके चरित्र का निर्माण हो, अपने देश की जीवन्त परम्पराओं से उसका परिचय हो, उसके मन में सौन्दर्य-भावना का विकास हो और वह आधुनिक जीवन-मूल्यों के प्रति सजग हो सके।

प्रत्येक कवि-परिचय के अन्तर्गत उसका जीवन-परिचय, काव्यगत विशेषताएँ, रचनाएँ एवं भाषा-शैली का विवेचन अनुच्छेदवार किया गया है। पाठ के अन्त में प्रश्न-अभ्यास दिया गया है। सम्भावित प्रश्नों और अवतरणों की व्याख्या का अभ्यास कराने से छात्रों की लेखन-शक्ति और रचनात्मक प्रतिभा का विकास होगा। पाठ्यक्रम में निर्धारित रसों, छन्दों और अलङ्कारों का परिचय पुस्तक के अन्त में दिया गया है। इसके बाद टिप्पणियाँ हैं जिनमें विभिन्न रचनाओं के आवश्यक सन्दर्भ दिये गये हैं।

आशा है, हमारा यह प्रयास विद्यार्थियों और अध्यापकों दोनों को रुचिकर होगा तथा हिन्दी कविता के अध्ययन-अध्यापन में भी लाभप्रद सिद्ध होगा।

●●●

भूमिका

➡ काव्य क्या है?

काव्य वह छन्दोबद्ध एवं लयात्मक साहित्यिक रचना है, जो श्रोता या पाठक के मन में भावात्मक आनन्द की सृष्टि करती है। व्यापक अर्थ में काव्य से तात्पर्य सम्पूर्ण गद्य एवं पद्य में रचित भावात्मक सामग्री से है, किन्तु संकुचित अर्थ में इसे 'कविता' का पर्याय समझा जाता है। काव्य के दो पक्ष होते हैं—भाव-पक्ष और कला-पक्ष। भाव-पक्ष में काव्य के समस्त वर्ण्य-विषय आ जाते हैं और कला-पक्ष में वर्णन-शैली के सभी अंग सम्मिलित हैं। ये दोनों पक्ष एक-दूसरे के सहायक और पूरक होते हैं। भाव-पक्ष का सम्बन्ध काव्य की वस्तु से है और कला-पक्ष का सम्बन्ध आकार-शैली से है। वस्तु या आकार एक-दूसरे से पृथक् नहीं हो सकते, कोई वस्तु आकारहीन नहीं हो सकती। वैसे तो व्यापक दृष्टि से भाव-पक्ष और कला-पक्ष दोनों ही रस से सम्बन्धित हैं; क्योंकि कला-पक्ष के अन्तर्गत जो अलङ्कार, लक्षण, व्यञ्जना और रीतियाँ हैं, वे सभी रस की पोषक हैं, तदापि भाव-पक्ष का रस से सीधा सम्बन्ध है। वह उसका प्रधान अंग है, कला-पक्ष के विषय उसके सहायक और पोषक हैं।

काव्य के दो भेद किये जा सकते हैं—श्रव्य काव्य एवं दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य में रसानुभूति पढ़कर या सुनकर होती है, जबकि दृश्य काव्य में रसानुभूति अभिनय एवं दृश्यों के द्वारा ही सम्भव है। श्रव्य काव्य के भी दो उपभेद हैं—प्रबन्ध काव्य एवं मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य में किसी कथा का आश्रय लेकर रचना की जाती है, जबकि मुक्तक काव्य में स्वतन्त्र पदों के रूप में भावाभिव्यक्ति की जाती है। प्रबन्ध काव्य के भी दो प्रकार हैं—महाकाव्य और खण्डकाव्य।

➡ काव्य साहित्य का विकास

प्रत्येक भाषा का साहित्य उस भाषा को बोलनेवाले समाज का सजीव चित्र होता है। साथ ही, वह उस समाज को बदलने और उसको प्रगति की प्रेरणा देने का समर्थ साधन भी होता है। उस समाज को पृष्ठभूमि में रख कर ही उस भाषा के साहित्य के इतिहास का अध्ययन किया जा सकता है। साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियाँ, विभिन्न काव्य-धाराएँ एवं विभिन्न युग एक-दूसरे पर क्रिया-प्रतिक्रिया करते हुए अविच्छिन्न धारा में प्रवाहित होते हैं। इसी दृष्टि से हम हिन्दी काव्य साहित्य के स्वरूप एवं विकास का संक्षिप्त सर्वेक्षण निम्न पंक्तियों में करेंगे—

हिन्दी साहित्य मूलतः खड़ीबोली के परिनिष्ठित रूप का साहित्य है, पर इसकी परिधि में मैथिली, अवधी, ब्रज, राजस्थानी जैसी साहित्यिक बोलियों का साहित्य भी आ जाता है। इन सभी बोलियों में हमें एक जैसी ही अनुभूति और विचारधारा का साहित्य मिलता है। समय-समय पर साहित्य के विषय बदलते रहे और विभिन्न युगों में हिन्दी की विभिन्न बोलियाँ प्रधान रहीं। वीरगाथा काल में राजस्थानी, पूर्व-मध्यकाल में अवधी तथा उत्तर-मध्यकाल में ब्रजभाषा की प्रधानता रही। आधुनिक युग मूलतः खड़ीबोली का युग है।

गत दस शताब्दियों में हरियाणा प्रान्त से लेकर मध्य प्रदेश तक तथा राजस्थान से बिहार प्रदेश तक का समाज जो कुछ अनुभव करता रहा है, जो कुछ भी सोचता रहा है, जो उसकी आशा-निराशा और आकांक्षाएँ रही हैं, उन सब की अभिव्यक्ति ही हिन्दी साहित्य है। इस साहित्य में भारत की अखण्ड सामाजिक संस्कृति के साथ ही जनपदीय लोक-संस्कृतियों का प्रतिबिम्ब भी है।

अन्य भाषाओं की तरह हिन्दी का स्वरूप भी परिवर्तित होता रहा है। सातवीं शती के उत्तरार्द्ध से अपभ्रंश से विकसित होती हुई हिन्दी भाषा का साहित्य उपलब्ध होने लगता है। भाषा के स्वरूप में परिवर्तन होने पर हिन्दी के आदिकाल में अपभ्रंश साहित्य की प्रवृत्तियाँ चलती रही हैं। अतः अपभ्रंश साहित्य का सामान्य लेखा-जोखा हिन्दी साहित्य की गतिविधि समझने के लिए आवश्यक है। अपभ्रंश में साहित्य की बहुविध प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं—धर्म, शृंगार, भक्ति, वीर-भावना तथा अनेक प्रकार की रहस्य साधनाएँ इस साहित्य के प्रमुख विषय रहे हैं। एक ओर जैन आचार्यों और कवियों का धर्म एवं नीतिपरक साहित्य मिलता है, तो दूसरी ओर बौद्ध सिद्धों की रहस्यमय एवं गुह्य साधना की वाणी। बौद्ध सिद्धों, नाथों एवं जैन आचार्यों की रहस्य-गुह्य-योग-साधना और धार्मिक सिद्धान्तों की रचनाएँ मूलतः साहित्येतर हैं, पर उस युग के साहित्य को समझने के लिए अपरिहार्य हैं। नाथ साहित्य में भक्ति का पूर्वाभास भी होने लगता है। इस काल में कविता का प्रवाह अवरुद्ध नहीं था। जैन कवियों की रचनाएँ कविता की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। शृंगार रस का अच्छा विरह-काव्य भी इस युग में मिलता है। 'प्रबन्ध चिन्तामणि', 'कुमारपालचरित' जैसी महान् रचनाएँ और पुष्पदन्त, हेमचन्द्र जैसे श्रेष्ठ कवि भी इसी युग में हुए। इस प्रकार मूल हिन्दी साहित्य वस्तुतः अपभ्रंश साहित्य से ही विकसित हुआ है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन सदैव ही समस्यामूलक एवं विवादग्रस्त रहा है। अपभ्रंश के अञ्चल से हिन्दी के उदय के अनन्तर उसमें साहित्य-सृजन का क्रम चलता रहा है। एक सहस्र वर्षों के रचनाकाल को किस आधार से विभाजित किया जाय, निःसन्देह एक समस्या है। डॉ० ग्रियर्सन, मिश्र-बन्धु, डॉ० रामकुमार वर्मा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आदि विद्वानों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास का अलग-अलग काल-विभाजन किया है, जिसमें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काल-विभाजन को अधिकतर विद्वान् मानते हैं, जो उचित प्रतीत होता है। डॉ० श्यामसुन्दर दास तथा डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी आचार्य शुक्ल के काल-विभाजन को ही स्वीकृति दी है। पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ने डॉ० ग्रियर्सन तथा मिश्र-बन्धुओं के काल-विभाजन का समीकरण किया है। उन्होंने अपने काल-विभाजन को काल-क्रम से स्थिर किया है और प्रवृत्तियों के आधार पर उसका नामकरण किया है। शुक्लजी द्वारा निर्धारित काल-विभाजन इस प्रकार है—

1. **आदिकाल (वीरगाथाकाल) — संवत् 1050 वि० से 1375 वि० तक।**
2. **पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)— संवत् 1375 वि० से 1700 वि० तक।**
3. **उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)— संवत् 1700 वि० से 1900 वि० तक।**
4. **आधुनिककाल (गद्य काल) — संवत् 1900 वि० से अब तक।**

शुक्लजी का उक्त काल-विभाजन प्रामाणिक है। इसमें काव्य-प्रणयन शैली तथा ग्रन्थों की प्रसिद्धि को आधार माना गया है। वीर रस-परक रचनाओं की प्रधानता के कारण आदिकाल को वीरगाथाकाल कहा गया है। भक्ति-काव्य के प्राधान्य के कारण पूर्व-मध्यकाल को भक्तिकाल का नाम दिया गया है। श्रृङ्गार तथा लक्षण ग्रन्थों के बाहुल्य के कारण उत्तर-मध्यकाल को रीतिकाल और गद्य-रचना की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होने के कारण आधुनिककाल को गद्य-काल नाम दिया गया है।

आदिकाल

➡ नामकरण

हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक और इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल का समय सन् 993 ई० (संवत् 1050 वि०) से 1318 ई० (संवत् 1375 वि०) तक माना था और उसे वीरगाथा काल की संज्ञा दी थी, क्योंकि वे इस अवधि में वीरगाथाओं की रचना-प्रवृत्ति को प्रधान मान कर चले थे। किन्तु, परवर्ती विद्वान् 769 ई० से 14वीं शताब्दी के मध्य तक की अवधि को हिन्दी साहित्य का आदिकाल ही कहते हैं। आदिकाल ऐसा नाम है, जिसे किसी-न-किसी रूप में सभी इतिहासकारों ने स्वीकार किया है। भाषा की दृष्टि से हम इस काल के साहित्य में हिन्दी के आदि रूप का बोध पा सकते हैं, तो भाव की दृष्टि से हम इसमें भक्तिकाल

प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

- **चन्दबरदायी**—पृथ्वीराज रासो।
- **नरपति नाल्ह**—बीसलदेव रासो।
- **अब्दुल रहमान**—सन्देशरासक।
- **जगनिक**—आल्हखण्ड।
- **दलपति विजय**—खुमाण रासो।
- **नल्ल सिंह**—विजयपाल रासो।

से आधुनिक काल तक की सभी प्रमुख प्रवृत्तियों के प्रारम्भिक बीज खोज सकते हैं। इस काल की आध्यात्मिक, शृङ्गारिक तथा वीरता की प्रवृत्तियों का ही विकसित रूप परवर्ती साहित्य में मिलता है।

अधिकांश विद्वान् हिन्दी का प्रथम कवि **सरहपा** को मानते हैं जिनका रचनाकाल 769 ई0 से प्रारम्भ होता है। अतः हिन्दी साहित्य के आरम्भ की सीमा 8वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध मानी जाती है। दूसरी ओर विद्यापति को भी आदिकाल के अन्तर्गत माना जाता है, इनका रचना-काल 1375 ई0 से 1418 ई0 तक है। इस दृष्टि से आदिकाल की अन्तिम सीमा 1418 ई0 निर्धारित की जा सकती है, किन्तु इसमें भी सन्देह नहीं है कि भक्तिकाल में जिन प्रवृत्तियों का विकास हुआ, उनकी भूमिका विद्यापति के पूर्व ही पूर्ण हो चुकी थी, अतः विद्यापति को भक्तिकाल में रखकर 14वीं शताब्दी के मध्य को आदिकाल की अन्तिम सीमा मानना ही समीचीन होगा।

साहित्य मानव-समाज की भावनात्मक स्थिति और गतिशील चेतना की अभिव्यक्ति है। इसलिए आदिकालीन साहित्य के इतिहास को समझने के लिए तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों को जानना अपेक्षित है।

➡ राजनीतिक परिस्थिति

हिन्दी साहित्य का आदिकाल वर्धन-साम्राज्य की समाप्ति के समय से प्रारम्भ होता है। अन्तिम वर्धन-सम्राट् हर्षवर्धन के समय से ही सिन्ध प्रान्त पर अरबों के आक्रमण आरम्भ हो गये थे। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत की संगठित सत्ता खण्ड-खण्ड हो गयी। तदनन्तर राजपूत राजा निरन्तर युद्धों की आग में जल गये और अन्ततः एक विशाल इस्लाम साम्राज्य की स्थापना हो गयी। ईसा की 8वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक के भारतीय इतिहास की राजनीतिक परिस्थिति हिन्दू-सत्ता के धीरे-धीरे क्षय होने तथा इस्लाम सत्ता के धीरे-धीरे उदय होने की कहानी है। आदिकाल के इस युद्ध-प्रभावित जीवन में कहीं भी सन्तुलन नहीं था। जनता पर विदेशी आक्रान्ताओं के अत्याचारों के साथ-साथ युद्धकामी देशी राजाओं के अत्याचारों का क्रम भी बढ़ता चला गया। वे परस्पर लड़ने लगे और प्रजा पीड़ित होने लगी। पृथ्वीराज चौहान, जयचन्द आदि की पारस्परिक लड़ाइयाँ अन्तहीन कथा बनती गयीं। विदेशी शक्तियों के आक्रमण का प्रभाव मुख्यतः पश्चिमी भारत और मध्यप्रदेश पर ही पड़ा था। यही वह क्षेत्र था, जहाँ हिन्दी भाषा का विकास हो रहा था। अतः इस काल का समस्त हिन्दी साहित्य आक्रमण और युद्ध के प्रभावों की मनःस्थितियों का प्रतिफलन है।

➡ धार्मिक परिस्थिति

ईसा की छठी शताब्दी तक देश का धार्मिक वातावरण शान्त था किन्तु 7वीं शताब्दी के साथ देश की धार्मिक परिस्थितियों में परिवर्तन आरम्भ हुआ। इस समय आलम्बार और नायम्बार सन्त दक्षिण भारत से उत्तर भारत की ओर धार्मिक आन्दोलन लाये। बौद्ध धर्म का पतन प्रारम्भ हो गया था। शैव और जैन मत आगे बढ़ने की होड़ में परस्पर टकराने लगे थे। देशव्यापी धार्मिक अशान्ति के इस काल में बाहरी धर्म इस्लाम का भी प्रवेश हो रहा था। अशिक्षित जनता के सामने अनेक धार्मिक राहें बनती जा रही थीं। बौद्ध संन्यासी यौगिक चमत्कारों का प्रभाव दिखा रहे थे। वैदिक एवं पौराणिक मतों के समर्थक खण्डन-मण्डन की भूल-भुलैयों में पड़े थे। उधर जैन धर्म पौराणिक आख्यानों को नये ढंग से गढ़कर जनता की आस्थाओं पर नया प्रभाव जमा रहा था। आदिकाल की धार्मिक परिस्थितियाँ अत्यन्त विषम तथा असन्तुलित थीं। कवियों ने इसी स्थिति के अनुरूप खण्डन-मण्डन, हठयोग, वीरता एवं शृङ्गार का साहित्य लिखा।

➡ सामाजिक परिस्थिति

तत्कालीन राजनीतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों का देश की सामाजिक परिस्थितियों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा था। जनता शासन तथा धर्म दोनों ओर से निराश होती जा रही थी। युद्धों के समय उसे बुरी तरह पीसा जाता था। समाज के उच्च वर्ग में विलासिता बढ़ गयी थी। निर्धन वर्ग श्रमिक था। अन्धविश्वास जोरों पर था। साम्प्रदायिक तनाव बढ़ रहा था। योगियों का गृहस्थों पर आतंक छाया हुआ था। जनता दुर्भिक्ष, युद्ध और महामारियों का निरन्तर शिकार हो रही थी। सामाजिक परिस्थिति की इस विषमता में हिन्दी के कवियों को जनता की स्थिति के अनुसार काव्य-रचना की सामग्री जुटानी पड़ी।

➥ सांस्कृतिक परिस्थिति

आदिकाल भारतीय और इस्लाम इन दो संस्कृतियों के संक्रमण एवं ह्रास-विकास की गाथा है। इस काल में भारतीय संस्कृति का जो स्वरूप मिलता है वह परम्परागत गौरव से विच्छिन्न तथा मुस्लिम संस्कृति के गहरे प्रभाव से निर्मित है। तत्कालीन जन-जीवन के स्वरूप में इस संस्कृति की व्यापक छाप मिलती है। उत्सव, मेले, वेश-भूषा, आहार, विवाह, मनोरंजन आदि सब में मुस्लिम रंग मिल गया था। संगीत, चित्र, वास्तु एवं मूर्ति-कलाओं की मूल भारतीय परम्परा धीरे-धीरे क्षय होती गयी।

➥ साहित्यिक परिस्थिति

इस काल में साहित्य-रचना की तीन धाराएँ थीं। प्रथम धारा संस्कृत साहित्य की थी जिसका विकास परम्पराबद्ध था। दूसरी धारा का साहित्य प्राकृत एवं अपभ्रंश में लिखा जा रहा था। तीसरी धारा हिन्दी भाषा में लिखे जानेवाले साहित्य की थी, जिसमें तत्कालीन परिस्थितियों की प्रतिक्रिया प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में प्रतिबिम्बित हो रही थी।

आदिकाल के साहित्य को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) सिद्ध साहित्य (2) जैन साहित्य (3) नाथ साहित्य (4) रासो साहित्य (5) लौकिक साहित्य। इस युग में काव्य-रचनाएँ प्रबन्ध तथा मुक्तक दोनों रूपों में प्राप्त होती हैं।

➥ सिद्ध साहित्य

बौद्ध धर्म के वज्रयान तत्त्व का प्रचार करने के लिए सिद्धों ने जो साहित्य लोक-भाषा में लिखा, वह हिन्दी का सिद्ध साहित्य है। इन सिद्धों में सरहपा, शबरपा, लुइपा, डोम्मिपा, कण्हपा एवं कुक्कुरिपा हिन्दी के मुख्य सिद्ध कवि हैं। सरहपा को हिन्दी का प्रथम कवि माना जाता है। इनकी कविता का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

नाद न बिन्दु न रवि न शशि मण्डल,
चिअराअ सहाबे मूकल।
अजुरे उजु छाड़ि मा लेहु रे बंक,
निअहि बोहिया जाहुरे लाँक।
हाथ रे कांकाण मा लोउ दापण,
अपणे अपा बुझतु निअ-मण।

सरहपा की इस कविता से स्पष्ट है कि उस समय अपभ्रंश से हिन्दी का विकास होना प्रारम्भ हो गया था।

➥ जैन साहित्य

जिस प्रकार हिन्दी के पूर्वी क्षेत्र में, हिन्दी कविता के माध्यम से सिद्धों ने बौद्ध धर्म के वज्रयान मत का प्रचार किया, उसी प्रकार पश्चिमी क्षेत्र में जैन साधुओं ने भी अपने मत का प्रचार हिन्दी कविता के माध्यम से किया। जैन साहित्य का सबसे अधिक लोकप्रिय रूप 'रास' ग्रन्थ है। संस्कृत के 'रस' शब्द को जैन साधुओं ने 'रास' रूप देकर रचना की प्रभावशाली शैली बनाया। देवसेन रचित 'श्रावकाचार', मुनिजिनविजय कृत 'भरतेश्वर-बाहुबली रास', जिनधर्मसूरि कृत 'स्थूल भद्र रास', विजयसेन सूरि का 'रेवंत गिरि रास' आदि जैन साहित्य की निधि हैं।

➥ नाथ साहित्य

सिद्धों की वाममार्गी योगसाधना की प्रतिक्रिया में नाथपन्थियों की हठयोग-साधना प्रारम्भ हुई। गोरखनाथ, नाथ साहित्य के व्यवस्थापक माने जाते हैं। उन्होंने ईसा की 13वीं शताब्दी के आरम्भ में अपना साहित्य लिखा था। गोरखनाथ से पहले अनेक सम्प्रदाय थे, उन सबका नाथ पन्थ में विलय हो गया था। गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में गुरु-महिमा, इन्द्रिय-निग्रह, प्राण-साधना, वैराग्य, कुण्डलिनी जागरण, शून्य-समाधि आदि का वर्णन किया है। गोरखनाथ ने लिखा है कि धीर वह है जिसका चित्त विकार-साधन होने पर भी विकृत नहीं होता—

नौ लख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लै जोगी खेलैं, तब अंतरि बसै भँडारा॥

➥ रासो साहित्य

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में रचित जैन 'रास काव्य' वीरगाथाओं के रूप में लिखित रासो-कव्यों से भिन्न है। दोनों की रचना-शैलियों का अलग-अलग भूमियों पर विकास हुआ है। जैन रास काव्यों में धार्मिक दृष्टि प्रधान है, जबकि रासो परम्परा में रचित काव्य मुख्यतः वीरगाथापरक हैं। दलपति विजय कृत 'खुमाण रासो', नरपति नाल्ह रचित 'बीसलदेव रासो', चन्दबरदायी कृत 'पृथ्वीराज रासो' तथा जगनिक रचित 'परमाल रासो' (आल्हखण्ड), शारंगधर कृत 'हम्मीर रासो' आदि प्रसिद्ध रासो ग्रन्थ हैं। 'पृथ्वीराज रासो' आदिकाल का इस परम्परा का श्रेष्ठ महाकाव्य है। इसके रचयिता दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान के सामन्त तथा राजकवि चन्दबरदायी हैं। इसमें पृथ्वीराज चौहान के चरित्र का वर्णन है। यह महाभारत की तरह विशाल महाकाव्य है। इस काव्य में दो प्रमुख रस हैं— शृङ्गार और वीर। इसकी भाषा में ब्रज और राजस्थानी का मिश्रण है। शब्द-चयन रसानुकूल है। वीर रस के चित्रणों में प्राकृत और अपभ्रंश के शब्द भी यत्र-तत्र मिलते हैं। अलङ्कारों का सहज प्रयोग हुआ है। लगभग ६८ प्रकार के छन्द इसमें प्रयुक्त हुए हैं। एक उदाहरण देखिए—

बज्जिय घोर निसांन रान चौहान चहूँ दिशि।
सफल सूर सामन्त समर बल जंत्र मंत्र तिसि।
उट्ठि राज प्रथिराज बाग लग्ग मनहु वीर नट।
कढ़त तेग मन वेग लगत मनहु बीजु झट्ट घट्ट॥

वीर छन्द में विरचित परमाल रासो (आल्हखण्ड) भी बड़ा लोकप्रिय काव्य है।

➥ लौकिक साहित्य

आदिकाल में कुछ ऐसे ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, जो पूर्वोक्त प्रमुख प्रवृत्तियों से भिन्न हैं। ऐसे सभी उपलब्ध काव्यों को लौकिक साहित्य की सीमा में गिना जाता है। ऐसे काव्यों में कुशल रायवाचक कृत 'ढोला-मारू-रा-दूहा' और खुसरो की पहेलियाँ प्रसिद्ध हैं। कुछ मुक्तक छन्द भी मिलते हैं जो हेमचन्द्र के 'प्रबन्ध चिन्तामणि' में संकलित हैं।

आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. बौद्ध-सिद्धों की रचनाओं में एक ओर गुह्य साधनाओं की चर्चा है, दूसरी ओर वर्णाश्रम व्यवस्था का तीव्र विरोध है।
2. जैनाचार्यों की रचनाओं में जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के बड़े ही सरस वर्णन हैं, नैतिक आदर्शों का प्रचार-प्रसार है।
3. नाथ सम्प्रदाय के साधकों की रचनाओं में हठयोग की साधना-पद्धति का दर्शन है, तीव्र वैराग्य की भावना जगायी गयी है और वर्ण-जाति के बन्धन से ऊपर उठने का आग्रह है।
4. रासो साहित्य में आश्रयदाताओं के युद्धोत्साह, केलि-क्रीड़ा आदि के बड़े सरस वर्णन हैं। इतिहास के साथ कल्पना का प्रचुर उपयोग किया गया है। वीर और शृङ्गार रस का प्राधान्य है और प्रसंगानुसार कहीं परुष और कहीं कोमलकान्त शब्दावली का प्रयोग है।
5. लौकिक साहित्य में शृङ्गार, वीर और नीतिपरक भावनाओं को अभिव्यक्ति मिली है। खुसरो की पहेलियों में व्यंग-विनोद की अभिव्यञ्जना है।

आदिकाल में हिन्दी भाषा जन-जीवन से रस लेकर आगे बढ़ी है। उसने अपनी अनेक बोलियों को एकरूपता की ओर बढ़ा कर एक-सूत्र में बाँधा है। जीवन के विविध पक्षों का उसके काव्य में चित्रण हुआ है। परवर्ती कालों के लिए उसने अनेक परम्पराएँ डाली हैं, अनेक काव्य-रूप और शैली-शिल्प आदिकालीन साहित्य में प्रकट और पुष्ट हुए हैं, अतः आदिकाल को हिन्दी साहित्य का समृद्ध काल कहा जा सकता है।

भक्तिकाल

जिस काल में मुख्यतः भागवत धर्म के प्रचार तथा प्रसार के परिणामस्वरूप भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था, हिन्दी-साहित्य के इतिहास में उसे भक्तिकाल कहा जाता है। लोकोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण इस काल की भक्ति-भावना लोक-प्रचलित भाषाओं में अभिव्यक्त हुई। इस युग को हिन्दी साहित्य का पूर्व मध्यकाल भी कहते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल का निर्धारण सन् 1318 ई० (संवत् 1375 वि०) से 1643 ई० (संवत् 1700 वि०) तक किया है। भक्ति काव्य की परम्परा परवर्ती काल तक भी प्रवाहित होती रही है। अतः अध्ययन की सुविधा के लिए भक्तिकाल को 14वीं शती के मध्य से 17वीं शती के मध्य तक मानना उचित होगा। विदेशी सत्ता प्रतिष्ठित हो जाने के कारण देश की जनता में गौरव, गर्व और उत्साह का अब अवसर न रह गया था। अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवद्-भक्ति ही एक सहारा था। युगद्रष्टा भक्त कवियों ने देश की जनता को सँभालने के लिए जिस काव्य का गान किया, भक्तिकाल उसी का शुभ परिणाम है।

प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

- **सूरदास**—सूरसागर।
- **गोस्वामी तुलसीदास**—रामचरितमानस।
- **कबीरदास**—बीजक।
- **मलिक मुहम्मद जायसी**—पद्मावत।
- **मंझन**—मधु मालती।
- **उस्मान**—चित्रावली।
- **कुतबन**—मृगावती।

➥ राजनीतिक परिस्थिति

भक्तिकाल का आरम्भ दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351) के राज्यकाल में हुआ। शासक वंशों में सत्ता प्राप्त करने के लिए विद्रोह होते रहते थे। शेरशाह ने सैन्य-योजना सुसंगठित की थी, जिसका लाभ अकबर ने भी उठाया था। मुगलों में अकबर का राज्यकाल सभी दृष्टियों से सर्वोपरि रहा। वह हिन्दू-मुसलमान के समन्वय सम्बन्धी प्रयत्नों में शान्ति तथा व्यवस्था की स्थापना में सफल हुआ। जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी बहुत कुछ अकबर का ही अनुसरण किया था। इस समय तक देश की सैनिक शक्ति प्रायः क्षीण हो चुकी थी और विजेताओं का राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित हो चुका था। ऐसी अवस्था में वीरों के प्रशस्ति-गीत अपना प्रभाव खो चुके थे।

➥ सामाजिक परिस्थिति

भारतीय समाज में वर्णों और जातियों का विशिष्ट स्थान है। विशेषता यह है कि जिस समाज ने पारसी, यवन (यूनानी), शक, हूण आदि अनेक जातियों के साथ समन्वय करके उन्हें आत्मसात कर लिया, उसी का पैगम्बरी धर्म के अनुयायियों के साथ आपसी मेल-मिलाप उसी गति के साथ सम्भव न हो सका। फलस्वरूप दोनों पक्षों के बीच परस्पर सन्देह, जुगुप्सा और भेदभाव का वातावरण प्रबल हो उठा। विदेशी एवं विजातीय शासक हिन्दू जनता के साथ दुर्व्यवहार करते थे। छुआछूत के नियम कठोर और व्यापक थे। समाज में स्त्रियों का स्थान निम्न था। पर्दा-प्रथा जोरों पर थी। समाज में ऊँच-नीच की भावना पारस्परिक कटुता और घृणा की अवस्था तक पहुँच गयी थी। तत्कालीन साधु-समाज पर भी पाखण्ड की काली छाया मँडराने लगी थी। दैनिक-जीवन, रीति-रिवाज, रहन-सहन, पर्व-त्योहार आदि की दृष्टि से तत्कालीन भारतीय समाज सुविधा-सम्पन्न और असुविधा-ग्रस्त इन दो वर्गों में विभक्त था। प्रथम वर्ग राजा-महाराजा, सुल्तान, अमीर, सामन्त और सेठ-साहूकारों का था। दूसरा वर्ग किसान, मजदूर और घरेलू उद्योग-धन्धे में लगी सामान्य जनता का था। दूसरा वर्ग विपन्न और दुःखी था।

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'कवितावली' की निम्नलिखित पंक्तियों में तत्कालीन स्थिति का स्पष्ट परिचय मिलता है—

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों कहाँ जाइ, का करी।

➥ धार्मिक परिस्थिति

वैदिक धर्म की आस्था पर सिद्धों और नाथ-पन्थियों की रहस्य-गुह्य-साधना गहरा आघात कर चुकी थी। पूजा-पाठ, धार्मिक-क्रिया-कलाप आदि के प्रति जो आस्था हिन्दू-समाज में थी, उसकी जड़ें प्रायः हिल चुकी थीं। साम्प्रदायिकता तथा अन्ध-विश्वासों का बड़ा विस्तार था। पाखण्ड की पूजा हो रही थी। पण्डित और मौलवी धर्म की मनमानी व्याख्या करके हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म को परस्पर विरोधी बना रहे थे। इस काल में धर्म साधनाओं की बाढ़-सी आ गयी थी। धर्माचार के नाम पर अनाचार और मिथ्याचार पलने लग गया था। ऐसे समय में उसे किसी समन्वयवादी दर्शन और आचार-पद्धति की आकांक्षा थी, जो जीवन की सहज अनुभूति पर आधारित हो। इसी की पूर्ति भक्ति-आन्दोलन में हुई।

➥ साहित्यिक परिस्थिति

साहित्य की समृद्धि की दृष्टि से तो भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का 'स्वर्ण युग' कहलाता है। भक्ति की जो पुनीत धारा इस युग में प्रवाहित हुई, उसने अभी तक जन-मानस को आप्लावित कर रखा है। ब्रज तथा अवधी दोनों भाषाओं में काव्य-रचना हुई। सूर, तुलसी, कबीर और जायसी जैसे कवियों को इसी युग ने जन्म दिया।

➥ भक्ति-आन्दोलन

हिन्दी के वास्तविक साहित्य का प्रारम्भ भक्त कवियों की रचनाओं से ही होता है। इस भक्ति-भावना को जन-जीवन में व्याप्त करने के लिए ही वस्तुतः हिन्दी परिनिष्ठित अपभ्रंश, प्राकृताभास आदि से अलग हुई थी। उस युग की भक्ति-भावना सम्पूर्ण देश की युग चेतना में परिव्याप्त थी। उत्तर भारत में भक्ति-भावना को प्रवाहित करने का श्रेय स्वामी रामानन्द तथा महाप्रभु वल्लभाचार्य को है। उत्तर भारत की तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक अवस्थाएँ इस भक्ति आन्दोलन के जागरण के लिए उत्तरदायी हैं। मध्यकालीन धर्मों में हिन्दू, जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम प्रमुख थे; और परस्पर सम्पर्क रखते थे। उन दिनों हिन्दू और इस्लाम प्रधान धर्म थे। वैष्णव धर्म मूलतः भक्ति-प्रधान था। सूफी, इस्लाम धर्म की एक शाखा थी। उसकी उपासना-पद्धति में प्रेम की प्रधानता है। किसी ने भगवान् को निर्गुण समझा, किसी ने सगुण। कोई उसे ज्ञान से प्राप्त करना चाहता था, तो कोई विशुद्ध प्रेम से। इन धर्मों के अनुयायियों द्वारा भक्ति काव्य की उत्कृष्ट रचनाएँ हुईं। इस प्रकार भक्ति साहित्य का विपुल भण्डार समृद्ध हुआ। भक्ति-आन्दोलन का व्यापक प्रभाव तत्कालीन वास्तु-कला, मूर्तिकला और चित्रकला पर भी पड़ा है।

भक्ति एक साथ ही कई धाराओं में बँट कर प्रवाहित हुई जिसे निर्गुण भक्तिधारा और सगुण भक्तिधारा कहते हैं।

(क) निर्गुण भक्ति

जिस भक्ति में भगवान् के निर्गुण-निराकार रूप की आराधना पर बल दिया गया, वह निर्गुण भक्ति कहलायी। जिन कवियों ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की कटुता को कम करके उन्हें एक-दूसरे के समीप लाने का प्रयास किया, उन्होंने निर्गुण-साधना पर बल दिया। निर्गुण भक्ति की दो शाखाएँ हैं—

(i) ज्ञानाश्रयी शाखा—यह उपासना ज्ञान और प्रेम पर आधारित है। भगवान् के स्वरूप का तात्त्विक एवं अपरोक्ष साक्षात्कार तथा उसके प्रति अनन्य एवं सहज प्रेम ही निर्गुण उपासना का मूल स्वरूप है। निर्गुण सम्प्रदाय ने सहज एवं साधनापूर्ण जीवन-पद्धति का निर्देश दिया है। भक्तिकाल से पहले के जीवन में जो एक ओर व्रत आदि की रूढ़िवादिता थी और दूसरी तरफ रहस्य गुह्य साधनाओं की जटिलता थी, उनसे मुक्ति केवल सहज प्रेम, ज्ञान एवं सरल तथा सदाचारी जीवन-दर्शन से ही मिल सकती है। यह कार्य निर्गुण भक्ति ने किया। यही कारण है कि इस युग की सहज अनुभूति की कविता जनमानस की भाषा में अभिव्यक्त हुई। ज्ञानाश्रयी शाखा में भगवान् के अवतारों की कल्पना का निषेध है। केवल निर्गुण और निराकार ब्रह्म की उपासना है। हिन्दी में इस ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रधान कवि कबीर हैं। वे स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। उनकी भक्ति-भावना में बाह्याडम्बर, तीर्थ, व्रत, रोजा-नमाज आदि का खण्डन है और भगवान् को अद्वितीय ज्ञान एवं शुद्ध प्रेम से

प्राप्त करने का सन्देश है। भक्ति-भावना की अभिव्यक्ति उनका प्रमुख उद्देश्य है और वह अनुभूति ही काव्य बन गयी है। इस धारा के अन्य सन्त-कवि नानक, दादू, मलूकदास, रैदास आदि हैं।

(ii) प्रेमाश्रयी शाखा—इस शाखा के काव्यों का मूल विषय सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त एवं केवल सौन्दर्य वृत्ति से प्रेरित स्वच्छन्द प्रेम तथा प्रगाढ़ प्रणय-भावना है। इसके लिए नायक अनेक संकटों का सामना करने का साहस रखता है। सामाजिक रूढ़ियों में बँधे हुए परम्परागत प्रेम से हटकर स्वच्छन्द प्रेम की पवित्रता की स्थापना भी इन काव्यों का मुख्य प्रयोजन एवं प्रमुख उपलब्धि है। लौकिक प्रेम की सहज अनुभूति में आध्यात्मिकता तथा उसकी प्राप्ति के प्रयास में योग-साधना के दर्शन कराके इन कवियों ने जीवन को एक आस्था दी है जो रहस्य गुह्य साधनाओं तथा कठोर धर्मोपदेश, व्रत, नियम आदि से उखड़-सी गयी थी। ये कार्य प्रेम-कथाओं पर आध्यात्मिकता, रहस्यवाद, दार्शनिकता आदि के आरोप से तथा समासोक्ति या अन्योक्ति शैली को अपनाने से बड़ी ही सरलता से सिद्ध हो गया। इनकी कथावस्तु में लोक-कथाओं, इतिहास तथा कल्पना का मिश्रण है। इन काव्यों में रस, अलङ्कार आदि काव्यांगों का भी प्रौढ़ रूप मिलता है। इस धारा में मुसलमान और हिन्दू दोनों ही धर्मों के कवि आते हैं। अधिकांश तो सूफी हैं, पर कुछ निर्गुण सन्त और कृष्ण भक्त कवि भी हैं। इसमें बहुत से रहस्यवादी कवि भी हैं। रहस्यवाद के दर्शन से इस धारा के अधिकांश कवियों का भक्त कवियों में अन्तर्भाव हो जाता है। शुक्लजी ने प्रेममार्गी भक्तों की रचना-शैली को मसनवी कहा है, पर कुछ आलोचकों ने इन्हें भारतीय परम्परा का कथा-काव्य माना है। इन काव्यों में वातावरण और चरित्र-चित्रण भारतीयता के अनुरूप हुआ है। जायसी, मंझन, कुतबन आदि इस धारा के प्रमुख कवि तथा 'पद्मावत', 'अखरावट', 'मधुमालती' आदि प्रमुख ग्रन्थ हैं। इस शाखा के अधिकांश कवियों की भाषा अवधी है, पर अनेक कवियों ने राजस्थानी, ब्रज और राजस्थानी मिश्रित ब्रज का भी प्रयोग किया है।

(ख) सगुण भक्ति

जीवन में व्यापक आस्था लाने तथा समन्वयवादी जीवन-दर्शन एवं आचार-पद्धति प्रदान करने की भावना से भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ था। निर्गुण भक्ति—प्रधानतः निवृत्ति मार्ग, वैराग्य, ज्ञान, निराकार के प्रति प्रेम, योग-साधना आदि के द्वारा अपनी अपेक्षाकृत एकांगी जीवनदृष्टि, अभिव्यञ्जना की शुष्कता एवं व्यंग्यों की तीक्ष्णता के कारण समग्र जीवन में आस्था लाने का कार्य सम्पन्न नहीं कर सकी। उसने बाह्याडम्बर, क्लिष्ट साधनाओं, पारस्परिक विद्वेष तथा कटुता के झाड़-झंखाड़ काट कर फेंक दिये और इस प्रकार एक समतल भूमि तैयार कर दी। प्रेममार्गी कवियों ने प्रेम की सरसता से इस जीवन-भूमि को सिंचित किया और फिर जीवन की आस्था और विश्वास का बगीचा सगुण भक्तिधारा के कवियों ने लगाया। कृष्ण-भक्ति ने जीवन की सामान्य भावनाओं वात्सल्य, सख्य, रति-भाव के सभी रूपों को भक्ति में परिणत कर दिया। सारा जीवन ही साधना बन गया। इससे नित्य का लौकिक जीवन भक्तिमय हो गया। वैदिक धर्म की पुनः प्रतिष्ठा की; जो आकांक्षा हिन्दू जीवन में थी, वह राम-भक्त तुलसीदास जी द्वारा पूर्ण हुई। उन्होंने जीवन की सभी परिस्थितियों के लिए आचार एवं धर्म के मानदण्ड दिये। जीवन को मर्यादा का मार्ग दिखाया तथा उस सब में भक्ति-रस प्रवाहित कर दिया। गृहस्थ और वैरागी, निवृत्तिमार्गी और प्रवृत्तिमार्गी दोनों के लिए धर्म के वास्तविक स्वरूप की प्रतिष्ठा तुलसीदास के द्वारा ही हुई। यही सगुण भक्ति की देन है।

(i) कृष्णभक्ति शाखा—भगवान् कृष्ण का लीला पुरुषोत्तम रूप इस शाखा के भक्तों का आराध्य है। राधा-कृष्ण की विभिन्न लीलाएँ कृष्ण-साहित्य के प्रमुख विषय हैं। विद्यापति को इस शाखा का प्रथम कवि कहा जा सकता है। उनके बाद वल्लभ, निम्बार्क, राधा-वल्लभ, हरिदासी और चैतन्य सम्प्रदायों के भक्त कवियों ने कृष्ण-लीला का गान किया। इन भक्तों ने अपने-अपने सम्प्रदायों की भावना के अनुसार कृष्ण की बाल-लीला, किशोर-लीला एवं यौवन-लीला का वर्णन किया है। वल्लभ सम्प्रदाय में कृष्ण के बाल-रूप की ही आराधना है। शेष सम्प्रदायों में कृष्ण की किशोर एवं यौवन-लीला की प्रमुखता है। सूर तथा अष्टछाप के अन्य कवि वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे, अत: उनके काव्य में अन्य लीलाओं की अपेक्षा बाल-लीला का वर्णन अधिक है। बाल-वर्णन के क्षेत्र में सूरदास हिन्दी के ही नहीं, विश्व के श्रेष्ठ कवि हैं। कृष्ण-भक्ति के कवियों की भाषा ब्रज है। इन्होंने लीला रस प्रवाहित करनेवाले मुक्तक पद लिखे हैं। 'सूरसागर' सूर का विशाल काव्य है। इस ग्रन्थ का उपजीव्य भागवत है। इसमें कृष्ण के सम्पूर्ण जीवन का चित्र है, पर कवि का मन कृष्ण की बाल-लीला तथा गोपियों

के साथ की गयी प्रेम-लीला के संयोग एवं वियोग पक्षों के हृदयस्पर्शी वर्णन में अधिक रमा है। इनकी भक्ति पुष्टिमार्गीय कहलाती है। इसमें भगवान् के अनुग्रह से ही सब कुछ प्राप्त हो जाता है, साधनाओं का कोई महत्त्व नहीं है। कृष्ण-भक्ति ने जीवन की सभी इच्छाओं का आलम्बन कृष्ण को बनाकर सारे जीवन को ही भक्तिमय कर दिया।

(ii) रामभक्ति शाखा—इस शाखा के कवियों ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र का वर्णन किया। राम के चरित्र द्वारा ही जीवन के सभी क्षेत्रों के लिए धर्म, सदाचार एवं कर्त्तव्य का सन्देश जनसाधारण को हृदयंगम कराया जा सकता था। राम के चरित्र से भारतीय संस्कृति के समन्वयवादी रूप की पुनः प्रतिष्ठा हो सकी। राम का चरित्र इतना महान् और व्यापक है कि इसमें सम्पूर्ण मानव-मात्र को धर्म और जीवन का सन्देश देने की क्षमता है। यही कारण है कि काव्य के प्रबन्ध, मुक्तक, गीति आदि प्रकारों एवं दोहा, चौपाई, कवित्त, घनाक्षरी आदि शैलियों का आश्रय लेकर रामचरित्र वर्णित हो सका। रामकाव्य में जैसे भक्ति के सर्वांगीण रूप का परिपाक हुआ है, वैसे ही काव्योत्कर्ष भी अपनी चरम सीमाओं का स्पर्श करता है। भाव, अनुभाव, रस, अलङ्कार किसी भी दृष्टि से देखें, राम-काव्य हिन्दी साहित्य की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है। तुलसी इस धारा के सबसे प्रमुख कवि हैं। जीवन का समन्वयवादी एवं मर्यादावादी दृष्टिकोण ही तुलसी की सबसे बड़ी देन है। जीवन की इसी चेतना का स्पन्दन आज भी भारतीय समाज अनुभव कर रहा है। तुलसी ने अवधी और ब्रज दोनों ही भाषाओं में राम का गुणगान किया है। रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका आदि उनके अनुपम ग्रन्थ हैं। विनयपत्रिका की भक्ति में ज्ञान और भक्ति का पूर्ण सामंजस्य है। रामभक्ति की धारा प्रधानतः प्रबन्ध काव्य के रूप में बही। राम का चरित्र इसके लिए पूर्णतया उपयुक्त भी है, पर गीति और मुक्तक का क्षेत्र भी रामभक्ति से भरा पड़ा है। केशव की रामचन्द्रिका भी इसी धारा का ग्रन्थ है। नाभादास आदि महाकवि भी इसी धारा के हैं।

भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. निर्गुणोपासना की ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि निराकार ईश्वर के उपासक थे। गुरु के महत्त्व पर उनका विश्वास था और अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, मिथ्याडम्बर तथा जाति-पाँति के बन्धनों के वे विरोधी थे। इनके काल की भाषा में अनेक बोलियों का मिश्रण था तथा वह सीधी-सादी होती थी। प्रधान छन्द साखी (दोहा) और पद थे। विश्वबन्धुत्व की भावना जगाना इनका प्रधान उद्देश्य था।
2. निर्गुणोपासना की प्रेमाश्रयी शाखा के कवि भारतीय लोकजीवन में प्रचलित कथाओं एवं इतिहास-प्रसिद्ध प्रेमगाथाओं पर आधारित काव्य लिखते थे। इनमें सूफी उपासना-पद्धति का प्रभाव था। गुरु का महत्त्व था। भाषा अवधी थी तथा दोहा एवं चौपाई प्रमुख छन्द थे।
3. सगुणोपासना में कृष्ण-भक्ति काव्य के आधार कृष्ण और राम-भक्ति काव्य के आधार राम भगवान् के अवतार रूप में उपास्य थे। इनका गुणगान और लीलाओं का वर्णन प्रमुख था। सूर की काव्य-भाषा ब्रज थी। उन्होंने केवल मुक्तक पदों की रचना की, जिन्हें बाद में लीलाक्रम अथवा श्रीमद्भागवत के कथा-क्रम में संकलित कर लिया गया। तुलसी ने अवधी तथा ब्रजभाषा दोनों को काव्य-भाषा बनाया। तुलसी ने दोहा, चौपाई, सोरठा, बरवै, हरिगीतिका, सवैया आदि विविध छन्दों का प्रयोग किया है। विनयपत्रिका में विनय के पद हैं।
4. इस काल की विशिष्ट प्रवृत्ति कवियों का राजाश्रय से स्वतन्त्र होना है।
5. कृष्ण-भक्ति में श्रृङ्गार तथा वात्सल्य रस और सख्य भाव की प्रमुखता है। राम भक्ति में शान्त रस तथा दास्यभाव की प्रधानता है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति-काल को हिन्दी का स्वर्ण युग कहा जाता है। भक्त कवियों ने चित्त की जिस उदात्त भूमिका में रस कर हृदय-सागर का मन्थन कर मनोरम भावों के नवनीत को प्रदान किया है, वह भारतीय साहित्य की शाश्वत विभूति है। निर्गुणोपासना की ज्ञानाश्रयी शाखा के सन्त कवियों ने समाज-कल्याण के हितकारी उपदेश दिये। उन्होंने ज्ञान और सच्चे गुरु के महत्त्व को प्रतिष्ठा दी। प्रेमाश्रयी शाखा के सूफी सन्त कवियों ने ईश्वर-प्राप्ति का मुख्य साधन प्रेम बताया। सगुणोपासक कवियों ने कृष्ण की मनोरम लीलाओं एवं राम के मर्यादा पुरुषोत्तम चरित्र की बड़ी ही मनोरम झाँकियाँ प्रस्तुत कीं।

सीमित वर्ण्य-विषयों का असीम वर्णन इस काव्य की विशेषता है। इन कवियों की रचनाओं की केवल विषयवस्तु ही नहीं, अपितु काव्यशास्त्रीय पक्ष भी परम समृद्ध है।

रीतिकाल

हिन्दी साहित्य का उत्तर-मध्य काल, जिसमें सामान्य रूप से शृङ्गार प्रधान लक्षण ग्रन्थों की रचना हुई, रीतिकाल कहा जाता है। 'रीति' शब्द काव्यशास्त्रीय परम्परा का अर्थवाहक है। इस युग में कवियों की प्रवृत्ति रीति सम्बन्धी ग्रन्थ रचने की थी। इस काल के कवियों ने यदि शृङ्गारिक छन्द भी रचे तो वे स्वतन्त्र न होकर शृङ्गार रस की सामग्री के लक्षणों के उदाहरण होने के कारण रीतिबद्ध ही थे। इसीलिए इस काल को रीतिकाल की संज्ञा दी गयी है। शृङ्गार की रचनाओं की प्रमुखता के कारण इसे **शृङ्गार काल** भी कहा जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसका समय सन् 1643 ई0 (संवत् 1700 वि0) से 1843 ई0 (संवत् 1900 वि0) तक निश्चित किया है, परन्तु किसी भी युग की प्रवृत्तियाँ न तो सहसा प्रादुर्भूत ही होती हैं और न सहसा समाप्त हो जाती हैं। अनेक दशाब्दियों तक आगे-पीछे उनके प्रभाव पाये जाते हैं। अतः अध्ययन की सुविधा के लिए रीतिकाल की सीमाएँ हमें सामान्य रूप में 17वीं शती के मध्य से 19वीं शती के मध्य तक मान लेनी चाहिए।

प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

- **बिहारी** – सतसई
- **केशवदास** – रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया, नखशिख
- **भूषण** – शिवराज भूषण, शिवा बावनी छत्रसाल दशक

➡ राजनीतिक परिस्थिति

राजनीतिक दृष्टि से यह काल मुगलों के शासन के वैभव के चरमोत्कर्ष और उसके बाद उत्तरोत्तर ह्रास, पतन और विनाश का युग कहा जा सकता है। शाहजहाँ के शासनकाल में मुगल वैभव अपनी चरम सीमा पर रहा। जहाँगीर ने अपने शासनकाल में राज्य का जो विस्तार किया था, शाहजहाँ ने उसकी वृद्धि इतनी की कि उत्तर भारत के अतिरिक्त दक्षिण में अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुण्डा राज्य तथा पश्चिम में सिन्ध के लहरी बन्दरगाह से लेकर पूर्व में आसाम में सिलहट और दूसरी ओर अफगान प्रदेश तक एकच्छत्र साम्राज्य की स्थापना हो गयी थी। राजपूतों ने भी मुगलों के विश्वासपात्र एवं स्वामिभक्त सेवक होकर दिल्ली के शासन की अधीनता स्वीकार कर ली थी। देश में सामान्य रूप से शान्ति थी। राजकोष भरा-पूरा था। औरंगजेब के शासन की बागडोर सँभालते ही उपद्रव प्रारम्भ हो गये थे। उसने उनका दमन किया। उसके पश्चात् उसके पुत्रों में संघर्ष हुआ। 1857 ई0 में देशव्यापी राजक्रान्ति के बाद अंग्रेजों का शासन स्थापित हो गया। अवध, राजस्थान और बुन्देलखण्ड के रजवाड़ों का भी अन्त मुगल साम्राज्य के समान ही हुआ।

➡ सामाजिक परिस्थिति

सामाजिक दृष्टि से यह काल घोर अधःपतन का काल था। इस काल में सामन्तवाद का बोलबाला था। सामन्तशाही के जितने भी दोष होने चाहिए, सभी इस काल में थे। सामाजिक व्यवस्था का केन्द्र-बिन्दु बादशाह था। उसके अधीन थे मनसबदार और अमीर-उमराव। समाज में दो वर्ग प्रधान थे– एक था शासक और दूसरा शासित। शासित वर्ग में एक ओर श्रमजीवी और कृषक थे तो दूसरी ओर सेठ-साहूकार और व्यापारी। जनसाधारण की बड़ी ही शोचनीय दशा थी। सेठ-साहूकार भाग्यवादी थे। विलास के उपकरणों की खोज, उनका संग्रह तथा सुरा-सुन्दरी की आराधना अभिजात वर्ग का अधिकार था। मध्यम और निम्न वर्ग के लोग उसका अनुकरण करते थे।

➡ सांस्कृतिक परिस्थिति

सामाजिक दशा के समान ही देश की सांस्कृतिक स्थिति भी बड़ी शोचनीय थी। सन्तों एवं सूफियों के उपदेशों से प्रभावित होकर अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ ने हिन्दू और इस्लाम संस्कृतियों को निकट लाने का जो उपक्रम किया था वह औरंगजेब

की कट्टरवादी नीति के कारण समाप्तप्राय था। विलास-वैभव का खुला प्रदर्शन हो रहा था, धार्मिक नियमों का पालन कठिन हो गया था। मन्दिरों में भी ऐश्वर्य एवं विलास की लीला होने लगी थी। विलास के साधनों से हीन वर्ग कर्म एवं आचार के स्थान में अन्धविश्वासी हो चला था। जनता के इस अन्धविश्वास का लाभ धर्माधिकारी उठाते थे।

➥ साहित्य एवं कला की परिस्थिति

साहित्य एवं कला की दृष्टि से यह काल पर्याप्त समृद्ध था। इस युग में कवि एवं कलाकार साधारण वर्ग के होते थे, तथापि उनका बड़ा सम्मान होता था। उनके आश्रयदाता मुगल सम्राट् एवं राजा-महाराजा होते थे। कवियों एवं कलाकारों को अपने आश्रयदाताओं की अभिरुचि के अनुसार सृजन करना पड़ता था। इसका परिणाम यह हुआ कि इस युग के कवि एवं कलाकार प्रतिभावान होकर भी अपनी उत्कृष्ट मौलिकता समाज को प्रदान नहीं कर सके। विलासी आश्रयदाताओं के लिए रचा गया इस युग का काव्य स्वभावतः शृङ्गार-प्रधान हो गया। नारी के बाह्य सौन्दर्य के निरूपण में कवियों का श्रम सफल समझा जाता था। भाव-पक्ष की अपेक्षा कला-पक्ष का उत्कर्ष हुआ। इस काल का काव्यशास्त्रीय अध्ययन संस्कृत के आचार्यों का स्मरण दिलाता है। काव्य-कला के समान ही चित्रकला की भी इस युग में बड़ी उन्नति हुई। स्थापत्य, संगीत एवं नृत्य कलाओं की उन्नति तो इस काल की अपनी विशेषता है। इस युग में शृङ्गार रस प्रधान था। भूषण जैसे कवि ने वीर रस की रचना की। रीतिमुक्त कवियों में भाव की तन्मयता देखी जा सकती है। दोहा, सवैया, घनाक्षरी, कवित्त जैसे छन्द प्रचलित थे। ब्रजभाषा ही मुख्यतः काव्यभाषा थी।

भक्तिकाल तक हिन्दी काव्य प्रौढ़ता को पहुँच चुका था। भक्त कवियों ने अपने आराध्य के लीला-वर्णन में लौकिक रस का जो क्षीण रूप प्रस्तुत किया था, उत्तर-मध्यकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर वह पूर्ण ऐहिकता-परक प्रधानतः शृङ्गार रस के रूप में विकसित हुआ। भक्तिकालीन कवियों में सर्वप्रथम नन्ददास ने नायिकाभेद पर 'रसमंजरी' नाम की पुस्तक की रचना की। संस्कृत की काव्यशास्त्रीय परम्परा पर हिन्दी काव्य में 'रीति' के वास्तविक प्रवर्तक केशवदासजी हैं। इस दृष्टिकोण से रचे गये 'कविप्रिया', 'रसिकप्रिया' इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इसके बाद हिन्दी रीति ग्रन्थों की परम्परा निरन्तर विकसित होती गयी। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इस युग के सम्पूर्ण साहित्य को 'रीतिबद्ध' और 'रीतिमुक्त' दो वर्गों में बाँटा गया है—

(i) रीतिबद्ध काव्य—रीतिबद्ध काव्य के अन्तर्गत वे काव्य-ग्रन्थ आते हैं जिनमें काव्य-तत्त्वों के लक्षण देकर उदाहरण रूप में काव्य-रचनाएँ प्रस्तुत की गयी हैं। इस परम्परा में कतिपय ऐसे आचार्य थे, जिन्होंने काव्यशास्त्र की शिक्षा देने के लिए रीति ग्रन्थों का प्रणयन किया था। समस्त रसों के निरूपक आचार्यों में चिन्तामणि का नाम सर्वप्रथम आता है। 'रस विलास', 'छन्दविचार', 'पिंगल', 'शृङ्गार मंजरी', 'कविकुल कल्पतरु' आदि इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। चिन्तामणि की परम्परा के दूसरे महत्त्वपूर्ण कवि आचार्य कुलपति मिश्र, देव, भिखारीदास, ग्वाल कवि आदि हैं। जिन कवियों के कृतित्व के कारण रीतिकाव्य प्रतिष्ठित हुआ, उनमें देव का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। नव रसों का सफल निरूपण करनेवाले आचार्यों में पद्माकर तथा सैयद गुलाम नबी 'रसलीन' आदि प्रसिद्ध हैं। शृङ्गार-रस-विषयक साँगोपाँग विवेचन करने वाले आचार्यों में मतिराम का नाम सर्वप्रथम है। रीतिबद्ध काव्य-परम्परा के कवियों में कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने रीति ग्रन्थों की रचना न करके काव्य-सिद्धान्तों या लक्षणों के अनुसार काव्य-रचना की है। ऐसे कवियों में सेनापति, बिहारी, वृन्द, नेवाज, कृष्ण आदि की गणना की जाती है। सेनापति का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कवित्त रत्नाकर' है। बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनकी ख्याति का मूल आधार इनकी श्रेष्ठ कृति 'सतसई' है। दोहा जैसे छोटे से छन्द में एक साथ ही अनेक भावों का समावेश कर सकने की सफलता के कारण इनके काव्य में 'गागर में सागर' भरने की उक्ति चरितार्थ होती है।

(ii) रीतिमुक्त काव्य—रीति परम्परा के साहित्यिक बन्धनों एवं रूढ़ियों से मुक्त इस काल की स्वच्छन्द काव्यधारा को रीतिमुक्त काव्य कहा जाता है। आन्तरिक अनुभूति, भावावेग, व्यक्तिपरक अभिव्यञ्जना की सांकेतिक काव्य-रूढ़ियों से मुक्ति, कल्पना की प्रचुरता आदि इसकी विशेषताएँ हैं। इस धारा के प्रमुख कवि **घनानन्द** हैं। इनकी काव्य-शैली बड़ी भावनात्मक तथा

मार्मिक है। इस धारा के कवियों की लगभग सारी विशेषताएँ इनके काव्य में एक-साथ प्राप्त हो जाती हैं। इस धारा के अन्य प्रमुख कवि हैं–आलम, ठाकुर, बोधा और द्विजदेव।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. **रीति निरूपण :** इस युग में रीति ग्रन्थों की रचना मुख्यतः तीन दृष्टियों से की गयी है। इनमें प्रथम उन रीति ग्रन्थों का निर्माण है जिनका उद्देश्य काव्यांग विशेष का परिचय कराना है, कवित्व का आग्रह नहीं है। जसवन्त सिंह का 'भाषा-भूषण', याकूब खाँ का 'रस-भूषण', दलपतिराय वंशीधर का 'अलङ्कार-रत्नाकर' आदि रचनाएँ इसी कोटि में आती हैं। द्वितीय दृष्टि में रीति-कर्म और कवि-कर्म का समन्वय मिलता है। इनमें चिन्तामणि, मतिराम, भूषण, देव, पद्माकर, ग्वाल आदि आते हैं। लक्षणों का निर्माण न करके काव्य-परम्परा के अनुसार साहित्य-सृजन करनेवाले कवियों बिहारी, मतिराम आदि को तीसरी कोटि में रखा जाता है।
2. **शृङ्गारिकता :** शृङ्गार की प्रवृत्ति रीतिकाल की कविता में प्रधान है। शृङ्गार के संविधान में नायक-नायिकाओं के भेद, उद्दीपक सामग्री, अनुभावों के विविध रूपों, संचारियों, संयोग के विविध भाव तथा वियोग की विभिन्न कार्यदशाओं का निरूपण इस प्रवृत्ति का प्राण है। इसमें नारी के बाह्य चित्रण की प्रमुखता है।
3. **राज-प्रशस्ति :** यह प्रवृत्ति अलङ्कार और छन्दों के विवेचन करने वाले ग्रन्थों में भी देखने को मिलती है। इसका मुख्य विषय आश्रयदाताओं की दानवीरता अथवा युद्धवीरता की प्रशंसा ही रही है।
4. **भक्ति की प्रवृत्ति :** रीतिग्रन्थों के प्रारम्भ में मङ्गलाचरणों, ग्रन्थों के अन्त में आशीर्वचनों, भक्ति एवं शान्त रसों के उदाहरणों में यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है। राम और कृष्ण को विष्णु के अवतार के रूप में ग्रहण किया गया है। इस काल के कवियों के आकुल मन के लिए भक्ति शरण-भूमि थी। विलासिता के वर्णन से ऊबे हुए कवियों के द्वारा भक्ति की रची गयी फुटकर रचनाएँ बड़ी सुन्दर हैं।
5. **नीति की प्रवृत्ति :** अन्योपदेश तथा अन्योक्तिपरक रचनाओं में नीति की प्रवृत्ति मिलती है। इस प्रकार की रचनाओं में वैयक्तिक अनुभवों का विशेष स्थान है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल का अपना विशिष्ट स्थान है। इस काल में भारतीय काव्यशास्त्र की हिन्दी में अवतारणा हुई। इस काल की कविता का सामाजिक मूल्य भी है। पराभव के उस युग में समाज के अभिशप्त जीवन में सरसता का संचार कर रीति-कालीन कवियों ने अपने ढंग से समाज का उपकार किया था। कला की दृष्टि से भी रीतिकाल के काव्य का महत्त्व असन्दिग्ध है। इसी काल के कवियों ने ब्रजभाषा को पूर्ण विकास तक पहुँचाने का कार्य किया।

आधुनिक काल

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का सूत्रपात अंग्रेजों की साम्राज्यवादी शासन-प्रणाली के नवीन अनुभव से हुआ था, जिसमें बाहर से बड़ी शान्ति दृष्टिगत होती थी, किन्तु भीतर धन का अविरल प्रवाह विदेश की ओर अग्रसर रहता था। यद्यपि अंग्रेज हमारा आर्थिक शोषण करते रहे और अपने देश के सरकारी और साथ-ही-साथ व्यक्तिगत खजाने भी लगातार भरते रहे, तथापि भारतवर्ष में वैज्ञानिक बोध का प्रसार अंग्रेजों के सम्पर्क के फलस्वरूप ही हुआ। आधुनिक युग, जीवन की यथार्थता के ग्रहण, विश्व के विभिन्न व्यापारों के बुद्धिपरक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और साहित्य में सामान्य मानव की प्रतिष्ठा का युग रहा है और यह आधुनिक चेतना हमें अंग्रेजों के सम्पर्क से उपलब्ध हुई। आधुनिक हिन्दी काव्य इसी आधुनिक बोध से ओत-प्रोत आधुनिक चेतना से अनुप्राणित काव्य है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल का प्रारम्भ सन् 1843 ई० (संवत् 1900 वि०) से माना है। अन्य अनेक विद्वानों की सम्मति में इसका प्रारम्भ 19वीं शती के मध्य होता है। 7-8 वर्ष आगे-पीछे माने जाने से यह तथ्य विवादास्पद नहीं है। अध्ययन की सुविधा के लिए आधुनिक काल का उपविभाजन इस प्रकार किया गया है—

1. पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु-युग) — सन् 1857-1900 ई0
2. जागरण-सुधार-काल (द्विवेदी-युग) — सन् 1900-1922 ई0
3. छायावादी युग — सन् 1923-1938 ई0
4. छायावादोत्तर युग—
   (क) प्रगतिवाद, प्रयोगवाद — सन् 1938-1960 ई0
   (ख) नयी कविता युग — सन् 1960 ई0 से.......

प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

भारतेन्दु युग	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र श्रीधर पाठक	प्रेम-माधुरी कश्मीर-सुषमा
द्विवेदी युग	मैथिलीशरण गुप्त अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	साकेत प्रिय-प्रवास
छायावादी युग	जयशंकर 'प्रसाद' महादेवी वर्मा	कामायनी यामा
प्रगतिवादी युग	शिवमंगल सिंह 'सुमन' रामधारीसिंह 'दिनकर'	प्रलय-सृजन उर्वशी
प्रयोगवादी युग	'अज्ञेय' नागार्जुन	आँगन के पार द्वार प्यासी-पथरायी आँखें
नयी कविता युग	गिरिजाकुमार माथुर भवानीप्रसाद मिश्र	धूप के धान खुशबू के शिलालेख

➡ भारतेन्दु युग

हिन्दी कविता में आधुनिकता का स्वर सर्वप्रथम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं में सुनने को मिला। हिन्दी काव्यधारा में नवजीवन के संचरण के लिए उन्होंने ही **'कविता-वर्धिनी सभा'** जैसी नवीन साहित्यिक संस्था की स्थापना की थी और उसके मुखपत्र के रूप में **'कविवचन सुधा'** प्रकाशित की थी। भारतेन्दुजी की इस साहित्यिक संस्था की बैठकों की सूचना इसी पत्रिका में छपा करती थी। इसी पत्रिका में उसकी बैठकों में पठित रचनाएँ प्रकाशित हुआ करती थीं और इसी पत्रिका में उन पर मिलने वाले पुरस्कारों की घोषणा होती थी। हिन्दी के आधुनिक काल का कवि अपनी रुचि के विषय को लेकर अपनी रुचि की भाषा और अपनी रुचि के साहित्यिक संविधान में कुछ कहने को स्वच्छन्द था। आधुनिक हिन्दी काव्य आधुनिक कवियों के इसी स्वच्छन्द और समर्थ व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है।

यह मनुष्य की सीमा है कि नवीनता के प्रति अत्यधिक आग्रहशील व्यक्ति भी परम्परा के प्रभाव से अपने को पूर्णतः मुक्त नहीं कर पाता। भारतेन्दु को एक ओर हम देश के आर्थिक शोषण से विक्षुब्ध, स्वदेशानुराग की भावना से ओतप्रोत, मातृभाषा की प्रतिष्ठावृद्धि के लिए कृतसंकल्प, समाज के सुसंस्कार के हित में सहज तत्पर, प्रकृति की दिव्य शोभा के प्रति स्नेह-विह्वल देखते हैं और दूसरी ओर वे वल्लभ सम्प्रदाय से दीक्षा ग्रहण करते हैं, राजाश्रित कवियों की भाँति महारानी विक्टोरिया की प्रशंसा में तल्लीन हैं, रीतिकालीन कवियों के समान काव्य की शृङ्गार-सज्जा में प्रवीण हैं। उनके समकालीन कवियों में भी इसी द्विधा व्यक्तित्व की अभिव्यञ्जना मिलती है। भारतेन्दु स्वयं तो सन् 1885 में दिवंगत हो गये थे, किन्तु उनके समकालीन प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', अम्बिकादत्त व्यास आदि का काव्याभ्यास 19वीं शताब्दी के अन्त तक चलता रहा। उत्तरार्द्ध के कवि श्रीधर पाठक में आधुनिक कविता का स्वच्छन्दतावादी स्वर और अधिक मुखरित हुआ।

➥ द्विवेदी युग

सन् 1900 ई0 में 'सरस्वती' के प्रकाशन के साथ हिन्दी कविता में आधुनिक प्रवृत्तियाँ बद्धमूल होनी आरम्भ हुईं। भारतेन्दु युग में उस काल की द्विधा वृत्ति के अनुरूप साहित्यिक भाषा के भी दो रूपों का प्रचलन रहा। गद्य रचनाएँ तो खड़ीबोली में लिखी गयीं, किन्तु काव्य-साधना ब्रजभाषा में ही चलती रही। आधुनिकता को हिन्दी साहित्य में पूर्णतः बद्धमूल करने के लिए आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जैसे जागरूक, व्यवस्थित और सशक्त व्यक्तित्व की अपेक्षा थी। सन् 1903 में उन्होंने 'सरस्वती' का सम्पादन-भार ग्रहण किया और अपने महाप्राण व्यक्तित्व की छाया में हिन्दी भाषा और साहित्य का सम्पूर्ण संविधान ही बदल डाला, इसीलिए सन् 1900 से 1922 ई0 तक के काल को द्विवेदी युग की संज्ञा दी जाती है।

आचार्य द्विवेदी की विशेष प्रसिद्धि हिन्दी गद्य को परिष्कृत, परिमार्जित और व्याकरणसम्मत बनाने की दृष्टि से है, किन्तु इससे भी अधिक उनका महत्त्व हिन्दी के शब्दभण्डार की अभिवृद्धि, उसकी अभिव्यञ्जना शक्ति के संवर्धन और उसे ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम धाराओं की अभिव्यक्ति के योग्य बनाने का रहा है। हिन्दी कवियों को उन्होंने ब्रजभाषा के मध्ययुगीन माध्यम को छोड़कर खड़ीबोली का आधुनिक माध्यम अपनाने की प्रेरणा दी। आचार्य द्विवेदी के काव्यदर्शन में विशेषरूप से उसके जड़ पक्षों के प्रति प्रबल विद्रोह का स्वर है और साथ-ही-साथ नये क्षेत्रों एवं प्रदेशों के पथ पर अग्रसर होने का आह्वान भी है।

आधुनिक काव्य-दृष्टि के अनुरूप उन्होंने कविता को मन के भावावेग का सहज उद्‌गार बताया। उनकी धारणा थी कि चींटी से लेकर हाथी पर्यन्त पशु, भिक्षुक से लेकर राजा पर्यन्त मनुष्य, बिन्दु से लेकर समुद्र पर्यन्त जल, अनन्त आकाश, अनन्त पर्वत सभी को लेकर कविता लिखी जा सकती है, सभी से उपदेश मिल सकता है और सभी के वर्णन से मनोरंजन हो सकता है। आचार्य द्विवेदी के इस व्यापक काव्य-दर्शन को लेकर मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', कामताप्रसाद गुरु, लोचनप्रसाद पाण्डेय आदि ने कविताएँ लिखीं। इनकी रचनाओं में भी हमें परम्परा और प्रयोग दोनों के स्वर सुनने को मिलते हैं। आचार्य द्विवेदी सहृदय होते हुए भी मूलतः बुद्धिवादी थे और उनके इसी व्यक्तित्व के अनुरूप उनके युग के साहित्य में इस जगत् के जीवन-प्रवाह का बुद्धिपरक व्याख्यान मिलता है। मैथिलीशरण गुप्त को हम भारतीय इतिहास के लगभग सभी पृष्ठों की बुद्धिपरक व्याख्या उपस्थित करते हुए देखते हैं, जो उनके रसात्मक व्यक्तित्व के कारण सरस भी है। उपाध्यायजी ने पहले कृष्ण और राधा की कथा को आधुनिक बुद्धिवादी दृष्टिकोण के अनुरूप नवीन कलेवर देकर उपस्थित किया और फिर कालान्तर में इसी दृष्टि से वैदेही-बनवास का प्रसंग प्रस्तुत किया। इस काल में अकेले 'रत्नाकर' परम्परा के साथ पूर्णतः आबद्ध होकर मध्ययुगीन विषयों पर मध्ययुगीन काव्यभाषा में मध्ययुगीन कला-सौष्ठव की ही सृष्टि करते रहे।

➥ छायावादी युग

प्रसादजी का रचनाकाल, जिनकी प्रारम्भिक रचनाओं में ही स्वानुभूति का स्वर प्रधान है, द्विवेदी युग के मध्य काल सन् 1909 से 'इन्दु' पत्रिका के प्रकाशन के साथ आरम्भ होता है। 'इन्दु' की प्रथम कला की प्रथम किरण में ही हम उन्हें स्वच्छन्दतावाद का उद्‌घोष करते देखते हैं।

स्वच्छन्दतावाद साहित्य में विद्रोह का स्वर रहा है। सामाजिक जीवन में वह रूढ़ियों और परम्पराओं के प्रति विरोध और व्यक्ति के अपनी रुचि के अनुसार कार्य करने की प्रवृत्ति रूप में प्रकट हुआ है। साहित्य में वह अत्यधिक सामाजिकता के विरोध में, आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति को प्रश्रय देता है। स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार स्वभावतः अनुभूतिशील और भावुक मनोवृत्ति का होता है। वह जीवन को अपनी भावना और कल्पना से अनुरंजित करके उपस्थित करता है। वह मूलतः सौन्दर्य का साधक होता है और उसकी यह सौन्दर्य-साधना कभी मानवीय रूप के लिए होती है, कभी प्रकृति के प्रति उन्मुख तथा कभी किसी दिव्य अनुभूति से संप्रेरित होती है।

स्वच्छन्दतावादी काव्य-रचनाओं का कला-पक्ष भी नवीनता लिये होता है। उसमें मौलिक कल्पना का स्वच्छन्द विलास ही दृष्टिगत होता है। हिन्दी का छायावादी काव्य इन सभी विशेषताओं से समन्वित है, साथ ही उसमें भारतीय जीवनधारा की कुछ परम्परागत और कुछ युगीन प्रवृत्तियाँ भी प्रकट हुई हैं। परम्परागत प्रवृत्तियाँ—आध्यात्मिकता का संस्पर्श और वैष्णव भक्ति-भावना तथा युगीन प्रवृत्तियाँ—राष्ट्रीयता, पीड़ित जनता के प्रति सहानुभूति, दुःखवाद या निराशावाद की हैं। प्रत्येक व्यक्ति की

अनुभूतियों का स्वरूप भी भिन्न होता है, इसीलिए हिन्दी के इन स्वच्छन्दतावादी कवियों का भी अपना अलग-अलग व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में उभरा है। उनकी काव्य-प्रवृत्तियों में इसीलिए पर्याप्त वैभिन्य है।

हिन्दी की स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा में आधुनिक काल के आध्यात्मिक महापुरुषों—रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, रामतीर्थ और कालान्तर में अरविन्द का प्रभाव रहा है। रवीन्द्रनाथ की आध्यात्मिक रचनाओं से भी हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी कवियों ने बहुत कुछ ग्रहण किया है। इसीलिए प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी की रचनाओं में अनेक स्थानों पर इस जगत् के विभिन्न स्वरूपों में उस परब्रह्म का छायाभास पाने जैसी प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है। इसी आध्यात्मिक छायादर्शन की प्रवृत्ति के कारण इस काव्यधारा को छायावाद काव्यधारा कहा गया, किन्तु छायावादी कवियों का सम्पूर्ण साहित्य इस आध्यात्मिक प्रवृत्ति से ओत-प्रोत नहीं है।

छायावादी कविता के ह्रास का सबसे बड़ा कारण विदेशी शासन के दमन-चक्र के नीचे पिसते हुए भारतीय जनसाधारण की निरन्तर बढ़ती हुई पीड़ा को कहा जा सकता है; उसी के बोध को लेकर प्रसाद, निराला और पन्त अपने मनोलोक की भावना और कल्पना के प्रदेशों से निकल कर कठोर यथार्थ की भूमि पर उतर आये, पीड़ित मानवता के प्रति सहानुभूति प्रकट करने लगे, जनता के दुःख-दर्द को वाणी देने लगे और अपने चारों ओर की कुरूपताओं को मिटाने में तत्पर हो उठे। प्रसाद ने कथा-साहित्य, पन्त ने काव्य-रचनाओं और निराला ने गद्य और पद्य दोनों ही विधानों में अपने चारों ओर के कठोर यथार्थ का चित्रण करनेवाली रचनाएँ उपस्थित कीं। किन्तु जीवन का यह नया यथार्थ अपने समुचित विकास के लिए नये जीवन-दर्शन की अपेक्षा रखता था। यह नया यथार्थ एक तो बाहर का था जिसमें एक ओर पूँजी की वृद्धि होती थी और दूसरी ओर दीनता का प्रसार होता था। मनुष्य के मन के भीतर की घुटन, निराशा, कुण्ठा आदि व्यक्तित्व को खण्डित करने वाली अनेक वृत्तियाँ बड़ी सरगर्मी से चक्कर लगा रही थीं। जीवन के बाह्य यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिए कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का दर्शन अपनाया गया और मनुष्य के मन के भीतर सिगमण्ड फ्रॉयड के मनोविश्लेषण सिद्धान्त को उपयोगी समझा गया। साहित्य में प्रथम को प्रगतिवाद और दूसरे को प्रयोगवाद की संज्ञाएँ मिलीं।

➡ छायावादोत्तर युग

(क) प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद—हिन्दी कविता में प्रगतिवाद की प्रतिष्ठा पश्चिम की मार्क्सवादी विचारधारा को लेकर हुई। किन्तु हमारे देश की भूमि पहले से ही इस नये जीवनदर्शन के लिए परिपक्व थी। यूरोप में पूँजीवादी सभ्यता के पर्याप्त विकसित हो जाने पर उसकी दुर्बलताओं को भली प्रकार पहचान कर उन्हें दूर करके नवीन सभ्यता के आविर्भाव की दृष्टि से साम्यवाद एवं अन्य प्रगतिशील विचारधाराओं का जन्म हुआ था। हमारे देश में भी औद्योगिकीकरण का क्रम बड़ी द्रुतगति के साथ चल रहा था और उसके फलस्वरूप मजदूर-संगठन और उनकी देखा-देखी किसान सभाएँ भी बनने लगी थीं। सन् 1917 में रूस की राज्य-क्रान्ति के अनन्तर सोवियत शासन स्थापित हो जाने पर भारतीय बुद्धिवादी भी सर्वहारा वर्ग को संगठित करके जनक्रान्ति की बात सोचने लगा था। पण्डित जवाहरलाल नेहरू और रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे महापुरुषों ने भी रूसी क्रान्ति और सोवियत शासन का अभिनन्दन किया था। इसी पृष्ठभूमि में सन् 1936 की लखनऊ कांग्रेस के समय **प्रगतिशील लेखक संघ** की स्थापना हुई। गाँधीजी की विचारधारा से पर्याप्त प्रभावित प्रेमचन्दजी इस संस्था के प्रथम अधिवेशन के सभापति हुए। इस प्रकार हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी आन्दोलन चाहे मार्क्सवाद से अधिक अनुप्राणित हो गया हो, किन्तु आरम्भ में गाँधीवादियों और कांग्रेस के वामपन्थी विचारधारा के अनेक व्यक्तियों ने इसका सम्पोषण किया था। नरेन्द्र शर्मा का काव्य-विकास प्रेम और प्रकृति के उपरान्त गाँधीवाद और प्रगतिवाद की भूमिका तक पहुँचा। अब वे दर्शन एवं चिन्तन प्रधान हो गये हैं। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और सुमित्रानन्दन पन्त की रचनाओं से आधुनिक काव्य में प्रगतिवादी आन्दोलन का आरम्भ हुआ। गजाननमाधव मुक्तिबोध ने अपने सम्बन्ध में, अपने समाज, देश और विदेश के सम्बन्ध में गम्भीरता से सोचने को बाध्य किया और एक चिन्तन दिशा प्रदान की। रामधारीसिंह 'दिनकर' ने इसके क्रान्तिकारी पक्ष को वाणी दी और फिर रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', शिवमंगलसिंह 'सुमन', डॉ0 रामविलास शर्मा की रचनाओं में उसका स्वरूप और निखरा।

प्रगतिवाद के साथ-साथ मनुष्य के मन के यथार्थ को अभिव्यक्त करनेवाली प्रयोगवादी काव्यधारा भी सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के नेतृत्व में प्रवाहित हुई। इस धारा के कवियों पर प्रारम्भ में फ्रॉयड के मनोविश्लेषण सिद्धान्त का प्रभाव विशेष रूप से था। सन् 1943 में 'अज्ञेय' ने अपनी पीढ़ी के छह कवियों के सहयोग से 'तारसप्तक' का प्रकाशन किया।

इस काव्यधारा को प्रयोगवाद की संज्ञा क्यों दी गयी, इस सम्बन्ध में भी **'अज्ञेय'** का यह वक्तव्य द्रष्टव्य है—

''प्रयोग सभी कालों के कवियों ने किया है....किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक ही है। किन्तु कवि क्रमशः अनुभव करता आया है कि जिन क्षेत्रों में प्रयोग हुए हैं उनसे आगे बढ़कर अब उन क्षेत्रों का अन्वेषण होना चाहिए जिन्हें अभी नहीं छुआ गया है या जिनको अभेद्य मान लिया गया है।''

(ख) नयी कविता-युग—सन् 1959 ई0 में तीसरे तारसप्तक के प्रकाशन तथा प्रयोगवाद की समाप्ति के साथ ही सन् 1960 ई0 से नयी कविता का जन्म माना गया। मनुष्य के मन का आलोक अब तक सर्वाधिक अभेद्य रहा था और अज्ञेयजी अथवा प्रयोगवादी कवियों के सौभाग्य से फ्रॉयड ने उसकी अर्गला खोल दी थी। भवानीप्रसाद मिश्र, गिरिजाकुमार माथुर, धर्मवीर भारती आदि की रचनाओं में आधुनिक मनोविज्ञान के विभिन्न सिद्धान्तों 'सम्बन्धित विचार प्रवाह', 'मुक्त चेतनाधारा', 'मनोविश्लेषण' आदि के अनुरूप मनुष्य के मनोलोक के भावना-प्रवाह, स्वप्न, अवचेतन के भाव-खण्डों आदि के चित्रण देखने को मिलते हैं। हिन्दी कविता इस प्रयोगशीलता की प्रवृत्ति से भी आगे बढ़ गयी है और अब पहले की कविता से अपनी पूर्ण 'पृथकता' घोषित करने के लिए 'नयी कविता' प्रयत्नशील है। सन् 1954 में डॉ0 जगदीश गुप्त और डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादन में 'नयी कविता' काव्य संकलन के प्रकाशन से आधुनिक काव्य के इस नये रूप का शुभारम्भ हुआ था और वह इसी नाम के संकलनों में ही नहीं 'कल्पना', 'ज्ञानोदय' आदि पत्रिकाओं के माध्यम से भी आगे बढ़ती रही है। पन्तजी ने 'कला और बूढ़ा चाँद' तथा दिनकर ने 'चक्रवाल' की कुछ रचनाओं में इसी नवीन काव्य-प्रवृत्ति को अपनाया। नयी कविता की आधारभूत विशेषता है कि वह किसी भी दर्शन के साथ बँधी हुई नहीं है और वर्तमान जीवन के सभी स्तरों के यथार्थ को नयी भाषा, नवीन अभिव्यञ्जना विधान और नूतन कलात्मकता के साथ अभिव्यक्त करने में संलग्न है। हिन्दी का यह नया काव्य कविता के परम्परागत स्वरूप से इतना अलग हो गया है कि कविता न कहकर अकविता कहा जाने लगा है। आधुनिक कवि भावुकता के स्थान पर जीवन को बौद्धिक दृष्टिकोण से देखता है और इसीलिए उसे काल्पनिक आदर्शवाद के स्थान पर कटु यथार्थ अधिक आकृष्ट करता है।

●●●

काव्य साहित्य के विकास पर आधारित प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. आदिकाल के सिद्ध साहित्य और जैन साहित्य के एक-एक प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
2. 'मधु मालती' और 'साहित्य लहरी' के रचयिताओं के नाम लिखिए।
3. 'शृंगार मंजरी' और 'रस मंजरी' के रचयिताओं के नाम लिखिए।
4. 'कवितावर्धिनी सभा' के संस्थापक का नाम लिखिए तथा उसके मुख्य पत्र का नाम लिखिए।
5. भक्तिकाल की प्रेमाश्रयी शाखा के किसी एक महाकाव्य और उसके रचयिता का नाम लिखिए।
6. नरपति नाल्ह और चन्दबरदाई द्वारा रचित ग्रन्थों के नाम लिखिए।
7. आधुनिक युग के दो महाकाव्यों के नाम लिखिए।
8. आदिकाल के नाथ साहित्य के किन्हीं दो कवियों के नाम लिखिए।
9. 'आखिरी कलाम' और 'रामचन्द्रिका' के लेखकों के नाम लिखिए।
10. 'कवित्त रत्नाकर' और 'कविकुल कल्पतरु' के रचयिताओं के नाम लिखिए।
11. 'आनन्द कादम्बिनी' और 'ब्राह्मण' पत्रिका के सम्पादकों के नाम लिखिए।
12. सूफी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि एवं उनकी किसी एक कृति का नाम लिखिए।
13. निर्गुण भक्ति काव्यधारा के दो प्रसिद्ध कवियों के नाम बताइए।
14. चन्दबरदाई और नरपति नाल्ह के एक-एक ग्रन्थ का नाम लिखिए।
15. भारतेन्दु के समकालीन दो कवियों के नाम बताइए।
16. प्रगतिशील लेखक-संघ का प्रथम अधिवेशन किसकी अध्यक्षता में और कब हुआ था?
17. गजानन माधव मुक्तिबोध किस सप्तक में संकलित हैं? उनकी एक रचना का नाम लिखिए।
18. रासो ग्रन्थों में किन दो भाषाओं का प्रयोग किया गया है?
19. रामभक्ति शाखा के तुलसीदास के अतिरिक्त किन्हीं दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
20. 'कविकुल-कल्पतरु' एवं 'रामचन्द्रिका' के लेखकों के नाम लिखिए।
21. द्विवेदी युग के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
22. आदिकालीन दो रचनाओं के नाम लिखिए।
23. वीरगाथा काल के दो प्रमुख कवि और उनकी रचना का नाम लिखिए।
24. ज्ञानाश्रयी-शाखा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
अथवा निर्गुण भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
25. प्रेममार्गी काव्यधारा के तीन कवियों के नाम लिखिए।
26. प्रयोगवादी काव्य की कोई दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए।

27. कृष्ण को नायक मानकर रचना करनेवाले दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
28. आदिकाल के लिए प्रयुक्त विभिन्न नामों में से किन्हीं दो नामों का उल्लेख कीजिए।
29. रीतिकालीन कविता की दोनों प्रमुख धाराओं का नाम लिखिए।
30. अष्टछाप के दो कवियों के नाम लिखिए।
31. भक्तिकाल की दो प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
32. प्रयोगवादी काव्यधारा का नेतृत्व करनेवाले कवि का नामोल्लेख कीजिए और उनकी रचना का नाम लिखिए।
33. प्रयोगवादी काव्यधारा के किन्हीं दो कवियों एवं उनकी एक-एक रचना का उल्लेख कीजिए।
34. रीतिकाल की किन्हीं दो प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

अथवा रीतिकाल काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए।

35. आदिकाल (वीरगाथा काल) की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

अथवा वीरगाथा काल की किन्हीं चार प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

36. महाकवि सूरदास की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
37. छायावादी (आधुनिककाल) कवियों की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
38. दो छायावादी प्रमुख कवियों एवं उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
39. प्रगतिवाद की दो विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।
40. रासो साहित्य से सम्बन्धित किन्हीं दो कवियों के नाम लिखिए।
41. भक्तिकाल के चार प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
42. छायावाद के एक प्रमुख कवि एवं उसकी एक रचना का नाम लिखिए।
43. रीतिकाल की दो प्रमुख काव्य-कृतियों के नाम लिखिए।
44. रीतिबद्ध काव्य के दो कवियों के नाम लिखिए।

अथवा रीतिकाल के दो कवियों के नाम बताइए और उनकी एक-एक रचनाएँ भी लिखिए।

45. रामभक्ति शाखा की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
46. प्रेममार्गी शाखा के प्रमुख कवि का नाम बताइए तथा उसकी दो रचना का उल्लेख कीजिए।
47. रीतिकाल के वीर रस के किसी एक कवि और उसके द्वारा रचित एक ग्रन्थ का नाम लिखिए।
48. रीतिमुक्त काव्यधारा के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
49. द्विवेदीकालीन दो महाकाव्यों के नाम लिखिए।
50. ब्रजभाषा तथा अवधी भाषा के मध्यकालीन एक-एक प्रसिद्ध महाकाव्य का नाम लिखिए।
51. 'तारसप्तक' का अभिप्राय क्या है?
52. नयी कविता की आधारभूत विशेषताओं का उल्लेख करते हुए किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।
53. हिन्दी की रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कविता का अन्तर स्पष्ट कीजिए।
54. 'तारसप्तक' का सम्पादन किसने और किस समय किया?

अथवा 'तारसप्तक' किस सन् में प्रकाशित हुआ था? उसमें संग्रहीत किसी एक कवि का नाम लिखिए।

55. छायावाद के पतन का कारण संक्षेप में लिखिए।
56. पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु युग) के काव्य की विशेषताएँ बताइए।
57. भारतेन्दुकालीन कविता के विकास में योगदान देने वाले दो कवियों के नाम निर्देश कीजिए।

58. 'तारसप्तक' की कविताएँ किस काव्यधारा से सम्बन्धित हैं?

59. अवधी भाषा के किन्हीं दो कवियों के नाम लिखिए।

60. भक्तिकालीन विभिन्न काव्यधाराओं में किस धारा का काव्य सर्वश्रेष्ठ है और उसका सर्वश्रेष्ठ कवि कौन है?

61. राम-भक्ति शाखा के सबसे प्रमुख कवि का नाम तथा उसकी एक प्रमुख रचना का नाम लिखिए।

62. 'साहित्य लहरी', 'चिदम्बरा' और 'कामायनी' में से किन्हीं दो के रचनाकारों के नाम बताइए।

63. सुमित्रानन्दन पन्त की एक रचना का नाम लिखिए।

64. छायावाद युग के दो महत्त्वपूर्ण कवियों के नाम लिखिए।

65. नयी कविता के दो महत्त्वपूर्ण कवियों के नाम लिखिए।

66. हिन्दी पद्य साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालों के नाम लिखिए।

67. प्रेमाश्रयी शाखा की कविताओं की विशेषताएँ लिखिए।

68. 'आँसू', 'उर्वशी', 'राम की शक्ति-पूजा', 'उद्धवशतक' में से किन्हीं दो के रचनाकारों के नाम लिखिए।

69. सन्त काव्य का अर्थ स्पष्ट कीजिए। इस धारा के प्रमुख कवि का नाम भी लिखिए।

70. भक्ति काव्य की दो प्रमुख शाखाओं के नाम लिखिए।

71. निम्नलिखित में से किन्हीं दो कवि/कवयित्री की एक-एक प्रसिद्ध रचना का नाम लिखिए–
(i) महादेवी वर्मा, (ii) अज्ञेय, (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, (iv) दिनकर।

72. 'पद्मावत', 'दोहावली', 'गंगावतरण' में से किन्हीं दो के रचनाकारों के नाम लिखिए।

73. सगुण भक्तिकाव्य की विशेषताएँ संक्षेप में बताइए।

74. आदिकाल के दो रासो काव्य के नाम लिखिए।

75. आचार्य केशवदास की दो प्रमुख काव्य-रचनाओं के नाम लिखिए।

76. हिन्दी के उस कवि का नाम लिखिए जिसकी रचनाओं में आधुनिकता का स्वर सर्वप्रथम सुनने को मिला। उसकी एक रचना का नाम भी लिखिए।

77. महादेवी वर्मा की दो प्रमुख काव्य-रचनाओं के नाम लिखिए।

78. 'कीर्तिलता' और 'परमालरासो' नामक काव्यों के रचनाकारों के नाम बताइए।

79. निर्गुण भक्ति की प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि तथा उनकी एक रचना का नामोल्लेख कीजिए।

80. छायावादोत्तर काल के किसी एक कवि तथा उनकी एक रचना का नाम निर्देश कीजिए।

81. तुलसीदास और केशवदास की एक-एक रचना का नाम लिखिए।

82. रीतिमुक्त काव्यधारा की किन्हीं दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

83. 'पद्मावत' और 'रामचन्द्रिका' के रचयिताओं का नामोल्लेख कीजिए।

84. 'रामचन्द्रिका', 'प्रियप्रवास', 'आँसू' और 'शिवा बावनी' नामक काव्य-कृतियों के रचनाकारों का नाम लिखिए।

85. निम्नलिखित पत्रिकाओं के सम्पादकों का नाम लिखिए–
(i) कविवचन सुधा, (ii) सरस्वती।

86. पुनर्जागरण काल किस युग को मानते हैं? उस युग की एक काव्यकृति का उल्लेख कीजिए।

87. रीतिकाल का यह नाम क्यों पड़ा? इस काल के एक प्रसिद्ध कवि का नाम लिखिए।

88. किन्हीं दो प्रगतिवादी काव्यधारा के कवियों के नाम लिखिए।

89. सूफी काव्य के दो कवियों के नाम लिखिए।

90. भारतेन्दु द्वारा सम्पादित दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
91. किसी एक प्रगतिवादी कवि का नाम और उसकी किसी एक कृति का नाम लिखिए।
92. हिन्दी के किस कवि को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा गया है? उसकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।
93. मलिक मुहम्मद जायसी तथा सूरदास किस भाषा के कवि हैं?
94. 'भक्तन कौं कहा सीकरी सौं काम' यह पद किस भक्त कवि द्वारा रचित है? यह कवि भक्तिकाल की किस शाखा से सम्बन्धित है?
95. रीतिकाल के किसी एक 'रीतिसिद्ध' कवि का नामोल्लेख करते हुए उसकी किसी एक कृति का नाम लिखिए।
96. धर्मवीर भारती किस 'सप्तक' के कवि हैं? यह सप्तक किस सन् में प्रकाशित हुआ था?
97. 'जयमयंक जसचन्द्रिका' तथा 'पाहुड़ दोहा' कृतियों के रचनाकारों का नाम लिखिए।
98. हिन्दी का प्रथम महाकाव्य किसे माना जाता है? उसका रचनाकार कौन है?
99. 'रास पंचाध्यायी' तथा 'कनुप्रिया' कृतियों के रचनाकारों का नामोल्लेख कीजिए।
100. भक्तिकाल की राम भक्ति शाखा के दो कवियों के नाम लिखिए।
101. डॉ० रामविलास शर्मा, अज्ञेय, जगदीश गुप्त और शिवमंगलसिंह 'सुमन' में से दो प्रगतिवादी कवियों के नाम लिखिए।
102. आदिकाल के सिद्ध साहित्य के दो कवियों के नाम लिखिए।
103. केशवदास, कुलपति मिश्र, द्विजदेव और आलम में से रीतिमुक्त काव्यधारा के दो प्रतिनिधि कवि लिखिए।
104. प्रगतिशील लेखक-संघ का स्थापना वर्ष और उसके प्रथम सभापति का नाम बताइए।
105. 'पृथ्वीराज रासो' काव्य की रचना किस काल में हुई और उसके रचयिता कौन हैं?
106. 'रसिकप्रिया' और 'सतसई' नामक काव्य कृतियों के रचनाकारों के नाम लिखिए।
107. ज्ञानाश्रयी शाखा के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
108. सूरदास एवं तुलसीदास किस भक्ति-धारा के कवि हैं?
109. 'प्रियप्रवास' के रचयिता का नाम लिखिए।
110. 'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन कब और किसके संपादन में हुआ था?
111. निर्गुण भक्ति की दो शाखाओं के नाम लिखिए।
112. वीरगाथा काल की दो विशेषताएँ लिखिए।
113. छायावाद काल के दो रचनाकारों के नाम लिखिए।
114. मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा प्रणीत दो ग्रन्थों के नाम लिखिए।
115. गीतावली और दोहावली भक्तिकाल के किस कवि की रचनाएँ हैं?
116. महादेवी वर्मा किस काव्यधारा की कवयित्री हैं?
117. मोहिका हँसेसि, कि कोहरहिं कहनेवाले कवि का क्या नाम था?
118. जयशंकर प्रसाद की दो काव्यकृतियों का नामोल्लेख कीजिए।
119. 'सिवा को सराहौं, कै सराहौं छत्रसाल को' उक्ति किसने कही थी?
120. 'अवधी' के दो महाकाव्यों और उनके रचनाकारों के नाम लिखिए।
121. 'साकेत' एवं 'उर्वशी' के रचनाकारों के नाम लिखिए।
122. अज्ञेय का पूरा नाम लिखिए।
123. 'नयी कविता' पत्रिका के सम्पादकों के नाम लिखिए।

124. द्वैतवाद के प्रवर्तक का नाम लिखिए।
125. जनवादी कविता की वृहद्त्रयी के लेखकों के नाम लिखिए।
126. गुसाईं दत्त को कवि के रूप में किस नाम से जाना जाता है?
127. सप्तक परम्परा के दो कवियों के नाम लिखिए।
128. दूसरा तारसप्तक के सम्पादक का पूरा नाम लिखिए।
129. 'कविवचन सुधा' किस युग की साहित्यिक पत्रिका है? इसके सम्पादक का नाम लिखिए।
130. हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग किस काल को कहा जाता है?
131. प्रगतिवादी युग के किसी एक कवि का नामोल्लेख कीजिए।
132. भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा के दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।
133. छायावाद युग के प्रमुख कवि का नाम लिखिए।
134. तुलसीदास किस काल के कवि हैं? उनकी एक प्रमुख रचना का नाम लिखिए।
135. भूषण किस रस के कवि हैं?
136. साठेत्तरी कविता के किन्हीं दो कवियों और उनकी रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।
137. 'रसवन्ती' के रचनाकार का नाम लिखिए।
138. द्विवेदी युग के किसी एक महाकाव्य का वर्णन कीजिए।

➥ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन प्रेमाश्रयी शाखा के कवि नहीं हैं—
(i) जायसी (ii) सूरदास
(iii) मंझन (iv) कुतबन

2. निम्नांकित में रामभक्ति शाखा के कौन नहीं हैं—
(i) तुलसीदास (ii) चतुर्भुजदास
(iii) अग्रदास (iv) नाभादास

3. निम्नलिखित में से किस कवि को बाल-वर्णन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है—
(i) तुलसीदास (ii) बिहारी
(iii) सूरदास (iv) केशवदास

4. निम्नलिखित कवियों में वल्लभाचार्य का शिष्य कौन था—
(i) भूषण (ii) भिखारीदास
(iii) रघुराज सिंह (iv) कृष्णदास

5. निम्नलिखित कवियों में स्वामी रामानन्द का शिष्य कौन था—
(i) नानक (ii) मलूकदास
(iii) कबीर (iv) रैदास

6. निम्नलिखित में से कौन सगुणभक्ति शाखा के कवि नहीं हैं—
(i) सूरदास (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(iii) तुलसी (iv) मीरा

7. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रन्थ सगुणभक्ति धारा का श्रेष्ठ ग्रन्थ है—

(i) कवितावली (ii) साहित्यलहरी

(iii) श्रीरामचरितमानस (iv) रामलला नहछू

8. हिन्दी साहित्य के इतिहास में निम्न में से किस काल को 'स्वर्ण युग' कहा जाता है—

(i) रीतिकाल (ii) आदिकाल

(iii) भक्तिकाल (iv) आधुनिककाल

9. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रन्थ रीतिकालीन काव्य-परम्परा से सम्बन्धित है—

(i) रामचरितमानस (ii) बिहारी सतसई

(iii) दीपशिखा (iv) रश्मिरथी

10. रीतिकाल की निम्नलिखित प्रमुख प्रवृत्तियों में से कौन-सी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है—

(i) राज-प्रशस्ति (ii) शृङ्गारिकता

(iii) रीति-निरूपणता (iv) नीति

11. निम्नलिखित पत्रिकाओं में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कौन-सी पत्रिका प्रकाशित की थी—

(i) कविवचन सुधा (ii) सरस्वती

(iii) कल्पना (iv) ज्ञानोदय

12. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना द्विवेदी युग में लिखी गयी है—

(i) कामायनी (ii) तारसप्तक

(iii) प्रियप्रवास (iv) ग्राम्या

13. निम्नलिखित में से छायावादयुगीन कवि हैं—

(i) जयशंकर प्रसाद (ii) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

(iii) रामधारीसिंह 'दिनकर' (iv) कबीरदास

14. ''प्रयोग सभी कालों के कवियों ने किया है.......किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक ही है।''

ऊपर उद्धृत वक्तव्य निम्नलिखित रचनाकारों में से किसका है—

(i) निराला (ii) अज्ञेय

(iii) प्रसाद (iv) महादेवी वर्मा

15. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना छायावाद युग में लिखी गयी है—

(i) प्रेम-माधुरी (ii) उद्धव-शतक

(iii) चित्राधार (iv) सूरसारावली

16. 'तारसप्तक' का प्रकाशन वर्ष है—

(i) सन् 1954 ई0 (ii) सन् 1943 ई0

(iii) सन् 1938 ई0 (iv) सन् 1936 ई0

17. निम्नलिखित में से प्रयोगवादी कवि कौन हैं—

(i) भूषण (ii) सुमित्रानन्दन पन्त

(iii) बिहारी (iv) अज्ञेय

18. 'नयी कविता' काव्य संकलन के सम्पादक थे–

(i) रामेश्वर शुक्ल और डॉ0 रामविलास शर्मा

(ii) डॉ0 जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी

(iii) बालकृष्ण शर्मा और रामधारीसिंह 'दिनकर'

(iv) अज्ञेय और शिवमंगलसिंह 'सुमन'

19. 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना कब हुई–

(i) सन् 1943 ई0 में (ii) सन् 1954 ई0 में

(iii) सन् 1938 ई0 में (iv) सन् 1936 ई0 में

20. निम्नलिखित में से कौन छायावादी कवि हैं–

(i) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (ii) भूषण

(iii) बिहारी (iv) रामधारीसिंह 'दिनकर'

21. निम्नलिखित में कौन-सा कथन छायावाद से सम्बन्धित है–

(i) इस काव्य में लौकिक वर्णनों के माध्यम से अलौकिकता की व्यञ्जना की गयी है,

(ii) धार्मिक क्षेत्र में रूढ़िवाद और बाह्याडम्बर का विरोध किया गया है

(iii) इस काव्य में मूलतः सौन्दर्य और प्रेम-भावना मुखरित हुई है

(iv) इस काव्य में भाव-पक्ष की अपेक्षा कला-पक्ष की प्रधानता है

22. निम्नलिखित में से किस पत्रिका का सम्पादन पं0 प्रतापनारायण मिश्र ने किया है–

(i) विश्वामित्र (ii) सरस्वती

(iii) हिन्दी प्रदीप (iv) ब्राह्मण

23. निम्नांकित में से कौन-सी रचना भारतेन्दु युग में लिखी गयी है–

(i) प्रेममाधुरी (ii) कामायनी

(iii) निरूपमा (iv) युगवाणी

24. निम्नलिखित में छायावादोत्तर कवि कौन हैं–

(i) हरिऔध (ii) मैथिलीशरण गुप्त

(iii) महादेवी वर्मा (iv) अज्ञेय

25. 'विनय पत्रिका' के कवि का नाम है–

(i) सूरदास (ii) कबीरदास

(iii) तुलसीदास (iv) जायसी

26. 'अष्टछाप' के कवियों का सम्बन्ध भक्तिकाल की किस शाखा से है?

(i) ज्ञानाश्रयी शाखा (ii) प्रेमाश्रयी शाखा

(iii) कृष्णभक्ति शाखा (iv) रामभक्ति शाखा

27. हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का प्रवर्तक साहित्यकार किसे माना जाता है?

(i) भूषण (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(iii) मतिराम (iv) गंगकवि

28. निम्नलिखित में छायावादयुगीन कवि नहीं है–

(i) जयशंकर प्रसाद (ii) सुमित्रानन्दन पन्त
(iii) मैथिलीशरण गुप्त (iv) महादेवी वर्मा

29. निम्नलिखित में से वीरगाथात्मक रचना नहीं है?

(i) परमाल रासो (ii) विद्यापति
(iii) पृथ्वीराज रासो (iv) बीसलदेव रासो

30. वीरगाथा काल की विशेषता है–

(i) नारी का रूप सौन्दर्य चित्रण (ii) प्रकृति चित्रण
(iii) युद्धों का सजीव चित्रण (iv) मुक्तक काव्य की रचना

31. निम्नलिखित में से महाकवि भूषण की रचना है–

(i) रेणुका (ii) चिदम्बरा
(iii) दीपशिखा (iv) छत्रसाल दशक

32. 'परमालरासो' किस काल की रचना है?

(i) आदिकाल (ii) भक्तिकाल
(iii) रीतिकाल (iv) आधुनिककाल

33. निम्नलिखित में से 'पृथ्वीराज रासो' के रचनाकार हैं–

(i) जायसी (ii) मंझन
(iii) कुतबन (iv) चन्दबरदायी

34. 'विनय पत्रिका' किस भाषा की कृति है?

(i) अवधी (ii) ब्रजभाषा
(iii) खड़ीबोली हिन्दी (iv) भोजपुरी

35. 'कृष्ण काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं–

(i) मीरा (ii) रसखान
(iii) परमानन्ददास (iv) सूरदास

36. निम्नलिखित में से शृङ्गार और लक्षण ग्रन्थों की रचना किस काल में की गयी?

(i) आदिकाल (ii) भक्तिकाल
(iii) रीतिकाल (iv) वर्तमानकाल

37. वीरगाथाकाल के कवि हैं–

(i) भूषण (ii) बिहारीलाल
(iii) केशव (iv) चन्दबरदायी

38. रीतिसिद्ध काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं?

(i) घनानन्द (ii) बिहारी
(iii) बोधा (iv) आलम

39. जायसी का पद्मावत किस भाषा में लिखा गया है?

(i) ब्रजभाषा (ii) अवधी
(iii) खड़ीबोली (iv) फारसी

40. आदिकाल का एक अन्य नाम है–

(i) स्वर्णयुग (ii) सिद्ध-सामन्तकाल

(iii) शृङ्गारकाल (iv) भक्तिकाल

41. निम्नलिखित में से कौन भक्तिकाल का काव्य नहीं है?

(i) रामचरितमानस (ii) विनयपत्रिका

(iii) कवितावली (iv) बीसलदेव रासो

42. 'समन्वय की विराट चेष्टा' तुलसी के किस ग्रन्थ में मिलती है?

(i) रामचरितमानस (ii) विनय पत्रिका

(iii) कवितावली (iv) दोहावली

43. रामधारीसिंह 'दिनकर' किस काव्यधारा के कवि हैं?

(i) छायावाद (ii) प्रगतिवाद

(iii) नयी कविता (iv) राष्ट्रीय काव्यधारा

44. निम्न में से कौन कवि रीतिमुक्त काव्यधारा का है?

(i) चिन्तामणि (ii) केशव

(iii) ठाकुर (iv) देव

45. निम्न में कौन महादेवी की रचना है?

(i) धूप के धान (ii) चाँद का मुँह टेढ़ा

(iii) सान्ध्यगीत (iv) पल्लव

46. निम्नलिखित में से कौन प्रयोगवादी कवि नहीं है?

(i) प्रभाकर माचवे (ii) मुक्तिबोध

(iii) शिवमंगलसिंह 'सुमन' (iv) अज्ञेय

47. 'खुमाण रासो' किसकी रचना है?

(i) जगनिक (ii) नरपति नाल्ह

(iii) दलपति विजय (iv) भट्ट केदार

48. निम्नलिखित में से कौन कवि राष्ट्रीय काव्यधारा का नहीं है?

(i) दिनकर (ii) मैथिलीशरण गुप्त

(iii) जयशंकर प्रसाद (iv) अज्ञेय

49. जयशंकर प्रसाद की रचना है–

(i) युगवाणी (ii) अनामिका

(iii) लहर (iv) साकेत

50. निम्नलिखित में से कौन प्रगतिवादी कवि नहीं है?

(i) नागार्जुन (ii) त्रिलोचन

(iii) केदारनाथ अग्रवाल (iv) नेमिचन्द जैन

51. 'जयचन्द्र प्रकाश' किसकी रचना है?

(i) चन्दबरदायी (ii) नरपति नाल्ह
(iii) भट्ट केदार (iv) विद्यापति

52. निम्नलिखित में से भक्तिकालीन कवि कौन हैं?

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) कुम्भनदास
(iii) हरिऔध (iv) महादेवी वर्मा

53. छायावाद की विशेषता है—

(i) इतिवृत्तात्मकता (ii) शृङ्गारिक भावना
(iii) सौन्दर्य एवं प्रेम (iv) उपदेशात्मक वृत्ति

54. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रन्थ रीतिकाल का है?

(i) साकेत (ii) उद्धवशतक
(iii) रामचरितमानस (iv) बिहारी-सतसई

55. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रन्थ भक्तिकाल का है?

(i) पृथ्वीराज रासो (ii) साकेत
(iii) कामायनी (iv) विनयपत्रिका

56. 'आँसू' की रचना किस कवि ने की?

(i) बिहारी (ii) नरपति नाल्ह
(iii) जयशंकर प्रसाद (iv) अज्ञेय

57. निम्नलिखित में से रीतिकालीन कवि कौन-सा है?

(i) मीराबाई (ii) रसखान
(iii) घनानन्द (iv) मैथिलीशरण गुप्त

58. प्रयोगवाद के प्रवर्तक हैं—

(i) निराला (ii) अज्ञेय
(iii) जगन्नाथदास 'रत्नाकर' (iv) मैथिलीशरण गुप्त

59. मैथिलीशरण गुप्त आधुनिककाल के किस युग से सम्बन्धित हैं?

(i) शुक्ल युग (ii) द्विवेदी युग
(iii) छायावाद युग (iv) छायावादोत्तर युग

60. निम्नलिखित में कौन-सा ग्रन्थ रीतिकाल में लिखा गया है?

(i) साकेत (ii) बिहारी-सतसई
(iii) विनयपत्रिका (iv) पृथ्वीराज रासो

61. निम्नलिखित में से कौन-सी दो रचनाएँ भक्तिकाल की नहीं हैं?

(i) सूरसागर (ii) बिहारी-सतसई
(iii) बीजक (iv) आँसू

62. निम्नलिखित वाक्यों में से भक्तिकाल की दो सही प्रवृत्तियों को लिखिए–

(i) शृंगार रस की प्रधानता (ii) स्वान्तः सुखाय की भावना

(iii) राजप्रशस्ति की अभिव्यक्ति (iv) भाव-पक्ष एवं कला-पक्ष का समन्वय

63. निम्नलिखित में से कौन-सी रचनाएँ आधुनिककाल की हैं?

(i) विनय-पत्रिका (ii) साकेत

(iii) कामायनी (iv) पद्मावत

64. 'साहित्य सुधानिधि' के सम्पादक हैं–

(i) जगन्नाथ दास रत्नाकर (ii) महावीरप्रसाद द्विवेदी

(iii) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

65. 'हरिऔध' का जन्म-स्थान है–

(i) एबटाबाद (ii) निजामाबाद

(iii) काशी (iv) फर्रुखाबाद

66. 'प्रसाद' का काव्य प्रवृत्ति-निवृत्ति मिश्रित है–

(i) लहर में (ii) आँसू में

(iii) झरना में (iv) कामायनी में

67. कवि पंत को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला–

(i) चिदम्बरा पर (ii) वीणा पर

(iii) लोकायतन पर (iv) कला और बूढ़ा चाँद पर

68. 'नीहार' कृति है–

(i) जयशंकर प्रसाद की (ii) महादेवी वर्मा की

(iii) सुमित्रानन्दन पंत की (iv) 'निराला' की

69. निम्नलिखित में से प्रयोगवादी कवि कौन है?

(i) भूषण (ii) बिहारी

(iii) सुमित्रानन्दन पंत (iv) 'अज्ञेय'

70. 'अनामिका' के रचयिता हैं–

(i) महादेवी वर्मा (ii) सुमित्रानन्दन पंत

(iii) 'निराला' (iv) 'अज्ञेय'

71. कौन-सा कवि अष्टछाप का नहीं है?

(i) परमानन्द (ii) नन्ददास

(iii) नाभादास (iv) चतुर्भुजदास

72. रीतिकाल के किस कवि ने वीर रस की रचना लिखी है–

(i) घनानन्द (ii) भूषण

(iii) बिहारी (iv) सेनापति

73. तारसप्तक के सम्पादक हैं–

(i) निराला (ii) महादेवी वर्मा
(iii) अज्ञेय (iv) श्यामनारायण पाण्डेय

74. 'कामायनी' महाकाव्य के रचयिता हैं–

(i) सुमित्रानन्दन पंत (ii) निराला
(iii) जयशंकर प्रसाद (iv) धर्मवीर भारती

75. निम्नलिखित में कौन-सा ग्रन्थ आदिकाल का है?

(i) रामचरित मानस (ii) पद्मावत
(iii) पृथ्वीराज रासो (iv) कामायनी

76. ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं–

(i) तुलसीदास (ii) सूरदास
(iii) नन्ददास (iv) कबीरदास

77. तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना की है–

(i) ब्रजभाषा में (ii) भोजपुरी में
(iii) अवधी में (iv) खड़ीबोली में

78. रीतिकाल का अन्य नाम है–

(i) स्वर्णकाल (ii) उद्भवकाल
(iii) शृंगारकाल (iv) संक्रान्तिकाल

79. कविवर बिहारी की रचना है–

(i) गंगा लहरी (ii) सतसई
(iii) रस मीमांसा (iv) वैदेही वनवास

80. 'पृथ्वीराज रासो' का रचनाकाल है–

(i) पूर्वकाल (ii) भक्तिकाल
(iii) आदिकाल (iv) रीतिकाल

81. तारसप्तक के सम्पादक हैं–

(i) कुँवर नारायण (ii) अज्ञेय
(iii) श्रीधर पाठक (iv) हरिऔध

82. रीतिबद्ध काव्य के कवि हैं–

(i) बिहारी (ii) माखनलाल चतुर्वेदी
(iii) भिखारीदास (iv) ठाकुर

83. अखरावट के रचनाकार हैं–

(i) मलिक मुहम्मद जायसी (ii) सन्त कबीर
(iii) जगन्नाथदास 'रत्नाकर' (iv) घनानन्द

84. भक्तिकाल की रचना है–

(i) साकेत
(ii) विनय पत्रिका
(iii) लहर
(iv) प्रेम माधुरी

85. छायावाद के कवि हैं–

(i) कुँवर नारायण
(ii) जयशंकर प्रसाद
(iii) अज्ञेय
(iv) माखनलाल चतुर्वेदी

86. मैथिलीशरण गुप्त की रचना है–

(i) लोकायतन
(ii) परिमल
(iii) भारत-भारती
(iv) परिवर्तन

87. अष्टछाप के कवि नहीं हैं–

(i) नंददास
(ii) सूरदास
(iii) छीतस्वामी
(iv) भिखारीदास

88. प्रयोगवादी कवि हैं–

(i) महादेवी वर्मा
(ii) सुमित्रानन्दन पंत
(iii) निराला
(iv) गिरिजाकुमार माथुर

●●●

अध्ययन-अध्यापन

कविता का मुख्य उद्देश्य काव्य-सौन्दर्य की रसानुभूति द्वारा आनन्द प्राप्त कराना है। यह आनन्द मूलतः अर्थ का आनन्द है जो कविता में अन्तर्निहित रहता है। कविता का अध्ययन-अध्यापन इस प्रकार होना चाहिए कि इस उद्देश्य की पूर्ति हो सके। इसके लिए पूरी कविता को एक साथ पढ़ना चाहिए। पढ़ते समय यह ध्यान बराबर रखना चाहिए कि छन्द की लय, गति, यति का अनुसरण भी अर्थ-ग्रहण में सहायक होता है।

कक्षा में कविता का प्रभावशाली मुखर वाचन महत्त्वपूर्ण है। अध्यापक अपने आदर्श वाचन से इसमें सहायता दे सकते हैं। कक्षा में अच्छा पढ़ने वाले छात्र आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं और शेष छात्र उनका अनुकरण कर सकते हैं।

रस-निरूपण, छन्द-विधान और अलङ्कार-योजना का बोध कविता के भाव ग्रहण करने में सहायक होता है। टिप्पणी के अन्तर्गत कठिन शब्दों के अर्थ एवं आवश्यक सन्दर्भ दिये गये हैं। इस सारी सामग्री का अध्ययन भली-भाँति करना चाहिए। इस अध्ययन से रचनाओं के भाव-ग्रहण में सहायता मिलेगी और सौन्दर्यानुभूति के साथ काव्यानन्द की भी उपलब्धि हो सकेगी। बार-बार पढ़ने से ही अच्छी कविता का सौन्दर्य सहज ग्राह्य होता है।

पुस्तक में संकलित कुछ कविताएँ अपेक्षाकृत बड़ी हैं जिनमें आद्यन्त पूर्वापर सम्बन्ध लिये हुए एक ही कथा या भाव का वर्णन है, जैसे मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'नागमती वियोग वर्णन' सूर का भ्रमर-गीत एवं तुलसी का 'भरत महिमा' आदि। कुछ रचनाएँ ऐसी हैं जो अलग-अलग अपने अर्थ में पूर्ण और स्वतन्त्र हैं, जैसे कबीर की **साखियाँ** और तुलसी तथा बिहारी के **दोहे** आदि। इस प्रकार की स्वतन्त्र रचनाएँ मुक्तक कहलाती हैं। प्रत्येक दोहा या पद अपने में पूर्ण है, अतः प्रत्येक को पूरी कविता मानकर ही पढ़ना चाहिए और इसी प्रकार उसकी व्याख्या भी करनी चाहिए।

आपको किसी कविता में मुख्यतः नाद-सौन्दर्य मिलेगा तो किसी में भाव या विचार सौन्दर्य। कविता का नाद-सौन्दर्य वर्णों की आवृत्ति, शब्द-योजना, अलङ्कार-योजना, चित्रात्मक भाषा आदि पर निर्भर है। अतः इन विशेषताओं पर ध्यान रखकर कविता का सस्वर पाठ करने से नाद-सौन्दर्य अपने आप परिलक्षित होगा। अधिकतर कविताएँ छन्दोबद्ध हैं। मध्ययुगीन कवियों की कविताएँ छन्दोबद्ध ही मिलेंगी। उस युग के प्रसिद्ध छन्द हैं—दोहा, चौपाई, सवैया, कवित्त आदि। प्रत्येक छन्द की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, जिन्हें ध्यान में रखकर उन्हें पढ़ना चाहिए। इससे कविता के नाद-सौन्दर्य का बोध तो होगा ही, उसका अर्थ समझने में भी सहायता मिलेगी।

कुछ कविताएँ ऐसी मिलेंगी जिनमें नाद-सौन्दर्य या भाव-सौन्दर्य की अपेक्षा विचार-सौन्दर्य की प्रधानता है, जैसे कबीर की साखियाँ। इनके द्वारा कवि आदर्श जीवन-मूल्यों के प्रति हमें अभिप्रेरित करना चाहता है। ऐसी कविताओं को इसी दृष्टि से पढ़ना चाहिए। कवि सम्मेलनों में और रेडियो पर कवियों के प्रभावशाली वाचन पर ध्यान देना चाहिए। कुछ कवियों की कविताओं के रिकार्ड और टेप भी मिलते हैं जिनका सुविधानुसार उपयोग किया जा सकता है।

वाचन के साथ ही कविता का केन्द्रीय भाव उभर कर सामने आने लगता है। अध्यापक को प्रारम्भ में इस पर कुछ चर्चा करनी चाहिए। इस कविता की मूल प्रेरणा क्या है? कवि इस कविता में क्या कहना चाहता है? किन पंक्तियों में इस कविता का केन्द्रीय भाव छिपा है? आदि ऐसे प्रश्न हैं जिनसे इस चर्चा में सहायता मिल सकती है। यह आवश्यक नहीं है कि इन प्रश्नों का उत्तर एक ही हो। बहुधा एक ही कविता विभिन्न व्यक्तियों के मन पर विभिन्न प्रभाव डालती है, इसलिए इस विषय

में मतभेद स्वाभाविक है। इससे कवि के आशय को पकड़ने में सहायता मिलती है। यदि सहानुभूति से कविता को पढ़ा जाय तो प्रायः वह अपना आशय स्वयं कह देती है। इसके बाद कविता को पंक्तिशः देखा जाना चाहिए। अपरिचित शब्दों के अर्थ, अन्तःकथा और व्याख्या की अपेक्षा रखनेवाले स्थलों पर यहाँ विशेष ध्यान देना वांछनीय होगा। यह विश्लेषण कविता के सौन्दर्य को और अधिक गहराई से अनुभव कराने के लिए होना चाहिए।

कविता को उसके सम्पूर्ण विन्यास में समझने के बाद उसके कला-पक्ष पर ध्यान देना चाहिए। सम्पूर्ण कविता की संयोजना, उसकी भाषा, अर्थगर्भित शब्दों, छन्द विधान, अलङ्कार आदि के प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

इसके बाद एक बार फिर कविता का मुखर वाचन करना अच्छा होगा। कविता के बाद कवि के विषय में चर्चा उपयोगी होगी। कवि के काल और उसकी परिस्थितियों का कवि पर प्रभाव जानना अच्छा रहता है। कवि के समकालीन अन्य कवियों का सामान्य परिचय उपयोगी होगा। कवि की अन्य रचनाओं को सुनने में छात्र रुचि दिखा सकते हैं।

पठित कविता के समान भाव वाली कविता कक्षा में सुनायी जा सकती है। इसमें कविता के भावों को गहराई से समझने में सहायता मिलती है और कवियों तथा कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन करने की योग्यता का भी विकास होता है।

भाव-बोध की कसौटी यह है कि पाठक उस भाव की अभिव्यक्ति कर सके। व्याख्या इसी अभिव्यक्ति का एक रूप है। परीक्षा की दृष्टि से भी व्याख्या करना और उसे विधिवत लिखना उपयोगी होता है। व्याख्या के सन्दर्भ आदि लिखने के पश्चात् पहले मूलभाव लिखा जाय और फिर अर्थ स्पष्ट किया जाय। इस अनुक्रम में सुन्दर स्थलों की कुछ विशेष व्याख्या की जानी चाहिए। यदि कोई अन्तःकथा हो तो उसे भी लिखना चाहिए।

शिक्षण से सम्बन्धित सामान्य बातों का ही यहाँ पर संकेत किया गया है। स्थानीय परिस्थितियों और कार्य की सीमाओं को देखते हुए शिक्षकों को स्वविवेक का सहारा सदैव लेना पड़ेगा।

●●●